मार्ग दर्शन

भाग-२

हुज़ूर महाराज दर्शन दास

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला

मार्ग दर्शन

भाग-2

हुज़ूर महाराज दर्शन दास

सर्वाधिकार सुरक्षित

मार्ग दर्शन भाग-2

हुजूर महाराज दर्शन दास

संपादकीय मंडल-
दास हरीश
दास प्रवीण
दास राजीव
दास गुज्जरमल
दास शिवदेव सिंह
दास परमजीत
दास बलजिन्द्र सिंह (गुलाम अली)

प्रकाशक एवं वितरक
सचखण्ड नानक धाम
दरबार महाराज दर्शन दास जी
इन्द्रापुरी, लोनी रोड, गाजियाबाद (उ.प्र.)
वेबसाइट:www.sachkhandnanakdham.com

भूमिका

उपनिषद् कहते हैं-

तमसो मा ज्योतिर्गमय "अंधेरे से मुझे ज्योति की ओर ले चलो।"
मृत्योमा अमृतगमय- "मृत्यु से मुझे अमृत की ओर ले चलो।"
असतो मा सद्गमय- "असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो।"

अंधेरे को समाप्त कर पाने की सामर्थ्य तो केवल उसी के पास होती है जो स्वयं प्रकाश का स्रोत हो। दिया तेल या घी समाप्त होते ही बुझ जाता है। चंद्रमा सूर्य की रोशनी से चमकता है, उसका स्वयं का प्रकाश कुछ नहीं है। सूर्य लगभग चार अरब वर्षों से धरती को रोशनी दे रहा है और एक अनुमान के अनुसार आने वाले चार हजार वर्षों में बुझ जायेगा।

यदि कुछ शाश्वत् और स्थायी है तो वह है परमात्मा का प्रकाश जो सतगुरु के रूप में इस धरती पर आता है। सतगुरु के ज्ञान के प्रकाश के अतिरिक्त मनुष्य को अंधकार से मुक्ति दिलाने वाला कुछ भी नहीं है।

सतगुरु की रोशनी कभी भी नहीं बुझती- क्योंकि वह परमात्मा के अनन्त प्रकाश का अनन्त स्रोत है। सतगुरु मनुष्य पर दया कर उसे नाम शब्द की बख्शिश करते हैं। नाम रूपी प्रकाश मनुष्य के पूर्व जन्मों के पापों के साथ-साथ इस जन्म के दुष्कर्मों के अंधेरे को पल-भर में समाप्त कर देता है। निरंतर सुमिरन करने और सतगुरु की कृपा से यही नाम रूपी प्रकाश उसे दसवें दूवार पर स्थित अमृत रस तक भी पहुँचा देता है।

सतगुरु ही दया-मेहर कर जन्मों-जन्मों से बिछुड़ी हुई आत्मा को असत्य के संसार से निकाल कर सत्य रूपी परमात्मा से मिलाप करवा देते हैं।

ऐसे ही सतगुरु हैं हुजूर महाराज दर्शनदास जी जिन्होंने विश्व भर में लाखों जीवों को नाम दान की बख्शिश कर परमार्थ के मार्ग पर चलाया और

उन्हें दास बनाकर सरबत का भला करने का संदेश दिया।

इस पुस्तक "मार्गदर्शन भाग-2" में हुजूर महाराज जी ने सृष्टि की उत्पत्ति, ब्रह्माण्ड के रहस्यों और ईश्वरीय घर के भेदों को विस्तारपूर्वक समझाया है। यह पुस्तक खोजी, जिज्ञासुओं के साथ-साथ सभी सत्संगियों के लिए मार्ग दर्शक सिद्ध होगी यह हमारी आशा है। हम आभारी हैं उन सभी दासों के जिन्होंने इस पुस्तक का संकलन करने में अतुलनीय योगदान दिया है।

इस पुस्तक में लिखी गई 'गुरबाणी' में रह गई किसी भी तरह की त्रुटि के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

संपादक

विषय विवरण

प्रथम अध्याय

प्रश्न- 1 महाराज जी, सृष्टि की रचना व मानवता का जन्म कैसे हुआ?

प्रश्न- 2 महाराज जी, उपरोक्त खाके में दर्शाए गए घरों का विवरण विस्तारपूर्वक समझाएं।

प्रश्न- 3 महाराज जी, क्या इंसान के अंदर भी दाता का कोई स्थान है? कृपया विस्तारपूर्वक समझाएं।

प्रश्न- 4 महाराज जी, अभी तक आपने योगियों की अवस्था पर ही प्रकाश डाला है परन्तु साधारण जीव के लिए यह रास्ता अपनाना अति कठिन है। कृपया बताएं कि गृहस्थ व्यक्ति को उस दाता के दर्शन हेतु क्या करना चाहिए?

प्रश्न- 5 महाराज जी, सुमिरन क्या है?

प्रश्न 6 महाराज जी, सुमिरन करने का सही समय कौन सा है व सुमिरन कैसे करना चाहिए?

प्रश्न- 7 महाराज जी, अभी जो आपने सतुलोक से आगे अलख लोक, अगम लोक व अहक लोक का वर्णन किया है। क्या कोई जीव अपनी कमाई से वहां पहुँच सकता है?

प्रश्न- 8 महाराज जी, मन क्यों भटकता है व कैसे वशीभूत हो सकता है?

प्रश्न- 9 महाराज जी, सच्ची राह पर चलने की जिज्ञासा कैसे जागृत हो सकती है जब तक कोई चमत्कार न देखा जाए?

प्रश्न- 10 महाराज जी, आम तौर पर कहा जाता है कि जितने भी अच्छे-बुरे कर्म होते हैं वह ईश्वर करवाता है आदमी नहीं करता। जैसा कि गुरुवाणी में भी आता है "करे करावै आपे आपि"।

प्रश्न- 11 महाराज जी, प्रेम की वास्तविकता अवस्था क्या है?

प्रश्न- 12 महाराज जी, सत्य का सम्बन्ध आत्मा से है या बुद्धि से?

प्रश्न- 13 महाराज जी, यदि चलते-चलते जीव के मन में कोई बुरा विचार आ जाए तो क्या वह ईश्वर के घर में कर्म बन जाता है?

प्रश्न- 14 महाराज जी, आप जब भी रूहानी मंडलों के बारे में बात किया करते हो तो सतलोक को पहला, दूसरा अलख, तीसरा अगम व चौथा अहक बतातें हैं जबकि गुरु ग्रंथ साहिब में सचखण्ड को अंतिम घर कहा गया है, इसका क्या कारण है?

प्रश्न- 15 महाराज जी, आप कई बार कहा करते हैं कि ईश्वर बेपरवाह भी है और वापरवाह भी। कृपया विस्तारपूर्वक समझाएं कि बेपरवाह कैसे है और वापरवाह कैसे?

प्रश्न- 16 महाराज जी, क्या साधारण जीव ईश्वर की रज़ा में रह सकता है?

प्रश्न- 17 महाराज जी, क्या ईश्वर को पाने के लिए ही भक्ति जरूरी है या उसके बाद भी?

प्रश्न- 18 महाराज जी, गुरु का स्वरूप क्या है तथा सेवक का स्वरूप क्या है?

प्रश्न- 19 महाराज जी, जप-तप, भजन-सुमिरन में क्या अंतर है तथा ये कैसे किए जाते हैं?

प्रश्न- 20 महाराज जी संत, साधु, फकीर, तथा फक्कड़ में क्या अंतर है?

प्रश्न- 21 महाराज जी, वास्तविक दान किसे कहते है जो ईश्वर के घर में स्वीकार्य है?

प्रश्न- 22 महाराज जी, झूठ क्या है?

प्रश्न- 23 महाराज जी, क्या मृत्यु से पूर्व इंसान को अपनी मृत्यु के बारे में पता लग जाता है?

प्रश्न- 24 महाराज जी, सेवा कितने प्रकार की है तथा कौन सी सेवा उत्तम है?

प्रश्न- 25 महाराज जी, सेवा व ड्यूटी में क्या अंतर है?

प्रश्न- 26 महाराज जी, इस समय धरती पर देवी-देवता क्या कर रहे हैं?

प्रश्न- 27 महाराज जी, इंसान के हाथों पर लकीरें कब पड़ीं?

प्रश्न- 28 महाराज जी, दुख तथा रोग में क्या अंतर है?

प्रश्न- 29 महाराज जी, दया, मेहर, व कृपा में क्या अंतर है तथा यह जीव पर कब होती हैं?

प्रश्न- 30 महाराज जी, किरत, कर्म, किस्मत, नसीब तथा भाग्य में क्या अंतर है?

प्रश्न- 31 महाराज जी, द्वापर में पाण्डवों की एक ही द्रोपदी थी तथा श्रीकृष्ण महाराज जी की 360 सखियाँ थी, जबकि सामाजिक तौर पर आदमी एक ही स्त्री रख सकता है। ऐसा क्यों?

द्वितीय अध्याय

महाराज जी का संगत को ईश्वरीय संदेश।

प्रथम अध्याय

प्रश्न- महाराज जी, सृष्टि की रचना और मानव का जन्म कैसे हुआ?

उत्तर-

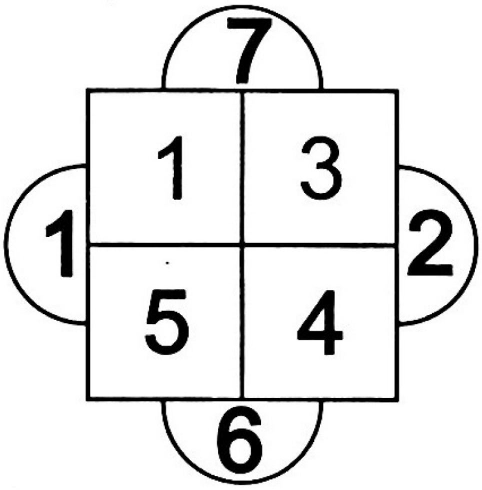

पहले घर तों इक सजाया।
तीजे घर तों ब्रह्मंड रचाया।
चौथे घर तों ऊंकार वरताया।
पंजवे घर तो मनुख सजाया।

समस्त सृष्टि की रचना तथा मानवता के जन्म को ईश्वर ने इस खाके के अनुसार बाँटा है। पृथक-पृथक घरों का अर्थ भी पृथक-पृथक है। सारी सृष्टि इसी आधार पर चल रही है।

प्रश्न- महाराज जी, उपरोक्त खाके में दर्शाए गये घरों का विवरण विस्तारपूर्वक समझाने की कृपा करें।

उत्तर- सबसे पहले घर में 1 है, जिसका अर्थ है "दाता"

1 अर्थात् दाता

द	स
न	स

प्रथम घर दाता का है जिससे समस्त सृष्टि की रचना हुई तथा उसी दाता का नूर कण-कण में विद्यमान है। उसी के स्वरूप से ही इंसान बना है, जिसमें दाता के चार गुण भरे हैं:-

द अर्थात् दया
स अर्थात् सत्य
स अर्थात् संतोष
न अर्थात् नाम

"दाता एक है"

समस्त सृष्टि का रचियता, स्वामी, एक परमात्मा, एक ईश्वर या एक ही दाता है जो सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान है। जो कि दुनिया को अनेकानेक युगों से सुख-समृद्धि बाँटता आ रहा है। उसके भण्डार में आज तक कोई कमी नहीं आई। उसके दर से अनेक जीव माँगें माँग-माँग कर झोलियाँ भर चुके हैं परन्तु उसका भण्डारा है कि बढ़ता ही जाता है। क्योंकि वह सबको सुख-समृद्धि देता है इसी लिए उसे दाता कहा जाता है।

दाता की ही दृष्टि है।
दाता की ही दुनिया है।
दाता की ही दया है, जिसके लिए संसार का हरेक जीव लालायित है।

दाता ही हर काम का हल (Solution) है :-

दाता ही हर काम का हल (Solution) है अर्थात् दाता ही हर मुश्किल का हल है। क्योंकि जब जीव साँसारिक दुविधाओं में या ईश्वरीय कामों की कठिनाईयों में घिर जाता है, सारे अंग, सम्बन्धी, दोस्त-मित्र दुनिया में साथ छोड़ जाते हैं या किसी शारीरिक रोग के कारण जीव अपनी दैनिक क्रियाओं को करने में भी असमर्थ हो जाता है तो जीव ईश्वर के समक्ष ही विनती करता है क्योंकि वह जानता है कि उसके बिना उसकी कठिनाईयों का हल कोई नहीं, कोई और उसकी सहायता कर भी नहीं सकता। यह भावना चौरासी लाख-योनियों के समस्त जीवों में व्याप्त है। पशु-पक्षी भी उस दाता को याद करते हैं। कुत्ता भी जब रोता है तो उसका मुँह ऊपर की ओर होता है, क्योंकि वह जानता है कि

उसका ईश्वर, उसका परमात्मा, उसका स्वामी ऊपर है जोकि उसकी चीख-पुकार, रोना सुनता है। जो जीव दाता को अपनी कठिनाइयों का हल मान लेते हैं, उन्हें संसार में कभी किसी चीज की कमी नहीं आती। उन जीवों की आवश्यकताएं दाता स्वयं पूर्ण करता रहता है। जो जीव उस दाता को अपनी मुश्किलों का हल न बना कर इधर-उधर भटकते रहते हैं, वह सदैव अपने जीवन में दुख पाते हैं, और अपना जीवन व्यर्थ में गंवा कर संसार से चले जाते हैं।

दाता ही मुक्ति (Salvation) देने वाला है:-

वास्तव में जीव को मुक्ति प्रदान करने वाला दाता ही है। जिस प्रकार उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु उसी स्तर के शिक्षक की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार दाता के काम-काज (Activity) को समझने के लिए किसी पूर्ण पुरुष की आवश्यकता है। उसके बिना उस दाता का भेद समझना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव ही है। इसकी प्रेरणा हरेक धर्म ग्रंथ की वाणी ने दी है। अर्थात् उस दाता के खेल व उसके भेद को समझने के लिए पूर्ण पुरुष के सिवा कोई विकल्प नहीं है क्योंकि दाता, पूर्ण-पुरुष और पूर्ण संत में कोई अंतर नहीं होता परन्तु पूर्ण-पुरुष लाखों-करोड़ों में कोई एक होता है जिससे जीव को परमार्थिक राह की युक्ति मिलती है। जो उनके ज्ञान केन्द्रों से संलग्न हो जाते हैं वे बहुत ही भाग्यवान होते हैं। जो उनसे दूर रह जाते हैं उन्हें कई-कई जन्म भटकना पड़ता है। इसलिए मोक्ष प्राप्ति हेतु किसी पूर्ण पुरुष की शरण आवश्यक है।

दाता ही जोड़ने वाला (Lotion) है:-

दुनिया में आकर प्रत्येक जीव भटक जाता है। वह संसार के माया-चक्र में फंसकर उस दाता को भुला बैठता है जिसने उसे सब कुछ दिया होता है।

जब बच्चा जन्म लेता है तो मातृ-गर्भ में उल्टे लटके हुए वह ईश्वर के समक्ष विनती करता है कि हे ईश्वर, मुझे इस कुम्भी नर्क से बाहर निकाल, मैं संसार में जाकर तेरा भजन-सुमिरन करूँगा, नाम जपूंगा। यह इसलिए क्योंकि अठारह नर्क हैं जिनमें से सबसे कठिन दण्ड मातृ गर्भ (कुम्भी नर्क) का है जिसमें जीव को उल्टा लटकना पड़ता है। कई बच्चे तो इस नौ माह के सफ़र में ही समाप्त हो जाते हैं। ये सब दण्ड हैं, इसी कुम्भी नर्क के दुख से मुक्ति प्राप्त करने के लिए महापुरुषों ने जीव को बंदगी करने के लिए बार-बार जोर दिया है ताकि

जीव मुक्त हो जाए और उसे यह दण्ड बार-बार न भुगतना पड़े। जन्म के समय बच्चे की दोनों मुट्ठियाँ बन्द होती हैं और वह पैदा होते ही रोता है। इसका कारण यही है कि वह ईश्वर से बिछुड़ गया होता है क्योंकि मातृ गर्भ में जीव का लगाव (Attachment) ईश्वर से बना रहता है परन्तु ज्योंही वह धरती पर आता है, यह लगाव टूट जाता है। फिर भी जब तक बच्चा बोलना आरम्भ नहीं करता तब तक उसे अपना अतीत याद आता रहता है। यही कारण है कि सोते समय कभी बच्चा मुस्कुराता है तो कभी डर जाता है। बंद मुट्ठियों से तात्पर्य यह होता है कि वह ईश्वर के घर से बहुत सी पूँजी लेकर एक व्यापारी की तरह धरती पर नाम का व्यापार करने आता है परन्तु सब कुछ यहीं लुटा कर अंत में खाली हाथ अर्थात् खोलकर चला जाता है। मृत्यु के कगार पर आकर जीव के गिनती के चंद साँस रह जाते हैं तो उसकी आँखें एक जगह स्थिर हो जाती हैं, वह पलकें भी नहीं झपका पाता। उस समय चित्र व गुप्त (जो हमारे अच्छे और बुरे कर्म लिखते हैं।) उसे उसके पूरे जीवन का चलचित्र दिखाते हैं। परन्तु जब जीव को अपने जीवन में एक भी अच्छा कर्म दिखाई नहीं देता तो वह पश्चाताप् करता है और जीव पश्चाताप् के तौर पर अन्तिम समय आँखों से दो आँसू अवश्य गिराता है और दाता के समक्ष निवेदन करता है, "हे दाता, एक बार फिर मुझे यह अवसर दे ताकि मैं तेरी भक्ति कर सकूँ" परन्तु यह अवसर बार-बार नहीं मिलता।

इस प्रकार दाता को भूल कर जीव उससे अलग हो जाता है, परन्तु दाता पूर्ण संतों के रूप में धरती पर आकर कार्य करते हैं क्योंकि यह सारी सृष्टि संतों के जप-तप के फलस्वरुप ही स्थिर है। दाता ही संतों के रूप में आकर उस अलग हुए जीव पर उपकार करके, अपनी कृपा-दृष्टि से, ईश्वर के साथ जोड़ते हैं। अर्थात् दाता स्वयं पूर्ण संत के रूप में आकर जीव को अपने साथ जोड़ लेता है।

दाता ही संस्थापक है।
दाता ही संचालक भी है।

दुनिया की रचना से पूर्व एक प्रकाश ही प्रकाश था जिसे वैज्ञानिक एक आग का गोला भी कहते हैं। यह प्रकाश बँटकर चार भागों में विभाजित हो गया। इसमें से एक भाग धरती व तीन हिस्से पानी बना। इस प्रकाश ने अपना रूप पानी में देखा तो उसे अपनी ही लौ नज़र आई। इस प्रकाश को तीन और रूप दिए गए तथा वहीं से एक शक्ति का जन्म हुआ जिसे जगत-जननी वैष्णों माता

कहा गया। इन तीनों रूपों से ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने जिन्हें सृष्टि का संचालन सौंपा गया। उस जगत-जननी वैष्णों माता ने अपनी शक्ति से, अपने प्रकाश से सरस्वती, लक्ष्मी व उमा को बनाया जिनसे आगे सृष्टि चली। ब्रह्मा का कार्य पैदा करना, विष्णु का पालन करना व महेश का कार्य नष्ट करना है। ये सब एक ज्योति के आदेशानुसार कार्य करते हैं। वह दाता एक स्थान पर विराजमान है, वह सभी स्थानों पर होते हुए भी एक स्थान पर है। वह दाता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के माध्यम से सारी सृष्टि चला रहा है। इस जगत में हर वस्तु अंकित की जा सकती है परन्तु उस दाता को आज तक कोई भी चिन्हित नहीं कर पाया। वह सारी सृष्टि चलाता है परन्तु उसे कोई नहीं चलाता और न वह किसी से कहने पर चलता है।

वह काम करता नहीं करवाता है, क्योंकि वह करवाना जानता है।
वह करता-पुरख व अकाल-मूरत है।
वह समय का स्वामी है अर्थात् वक्त का मालिक है।
वह कर्मों का फल देता है लेता नहीं।

इसीलिए दाता ही संस्थापक है और दाता संचालक भी है।

"तीजे घर तो ब्रह्मंड रचाया"
3 अर्थात् त्रिलोकी

द	ब
म	व

द्वितीय घर में अंक 3 है, अर्थात् त्रिलोकी, जिसका अर्थ है जल, थल, गगन।

ब अर्थात् ब्रह्मा
व अर्थात् विष्णु
म अर्थात् महेश

पहले घर में दाता स्वयं बैठा है तथा फिर उससे तीन रूप बने। आगे दाता ने इनको कार्य सौंपे। जिस प्रकार कि विष्णु को जल, महेश को थल व बह्मा को गगन अर्थात् आकाश दिया। वही एक दाता है जिसे शिव-शक्ति भी कहते हैं जोकि सब घरों का स्वामी है। विष्णु का आसन शेषनाग है तथा सवारी गरुड़ है। ब्रह्मा का आसन चंदन चौकी है तथा वाहन हँस है। महेश का आसन कैलाश पर्वत है तथा वाहन नंदी गण अर्थात् नंदी बैल है।

"चौथे घर तो ऊँकार वरताया"

4 अर्थात् चार वर्ण

ख	ब
व	स

तृतीय घर में अंक 4 है अर्थात् चार वर्ण।

ख अर्थात् खत्री (क्षत्रीय)
ब अर्थात् ब्राह्मण
स अर्थात् सूद (शूद्र)
व अर्थात् वैश (वैश्य)

ये चारों वर्ण ब्रह्मा के पुत्र मनु ने बनाए क्योंकि सृष्टि को चलाने के लिए चौरासी लाख योनियों में से सबसे उत्तम पद मानव को मिला। ब्रह्मा पुत्र मनु ने मानवता की कार्य-पद्धति के अनुसार, इसका विभाजन किया जिसे हम कार्य-विभाजन (Division of Labour) भी कह सकते हैं। खत्री को व्यापार, ब्राह्मण को विद्या, शूद्र को श्रम तथा वैश्य को खेती-बाड़ी दी गई परन्तु हम लोगों ने इसे साम्प्रदायिकता का रूप दे दिया है।

"पंजवें घर तो मानुख सजाया"

5 अर्थात् पाँच तत्व

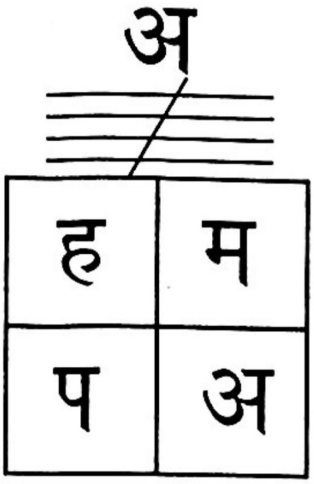

चतुर्थ घर में अंक 5 है जिसका अर्थ है पाँच तत्व जिससे मानव देह तैयार की गई।

ह अर्थात् हवा
म अर्थात् मिट्टी
अ अर्थात् आग
प अर्थात् पानी

ऊपर वाले 'अ' से भाव है आकाश अर्थात् बुद्धि। इंसानी चोले को इसीलिए यश-मान दिया गया है क्योंकि इंसान में सोचने की शक्ति है जिसके माध्यम से वह ईश्वर को भी मिल सकता है और अपना भला-बुरा भी सोच सकता है। यही कारण है कि मनुष्य को ईश्वर के घर में यश-मान मिला है। इस बात की गुरुवाणी भी पुष्टि करती है किः-

पंच परवाणु पंच परधान।। पंचह पावहि दरगह मान।।

इसके सिवा सृष्टि में किसी भी योनि को ईश्वर के घर में यश-मान नही मिल सका क्योंकि किसी के पास भी पाँचवाँ तत्व आकाश नहीं है। खाके के बाहर्य घरों कर विवरण इस प्रकार है :-

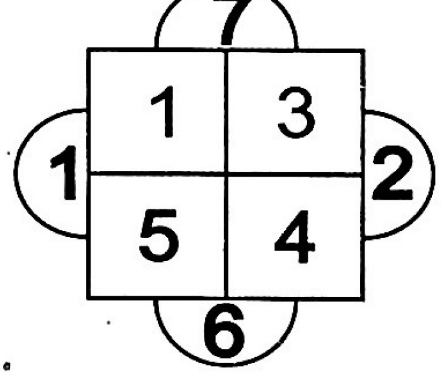

बाहर वाले सारे घरों में अंकों का कुल योग 16 है। यह सोलह कलाएं हैं। जीव के मरणोपरांत सोलह दिन पूरे करके सत्रहवें दिन क्रिया-कर्म किया जाता है। बाहर वाले घरों का अलग-अलग विवरण इस प्रकार हैः-

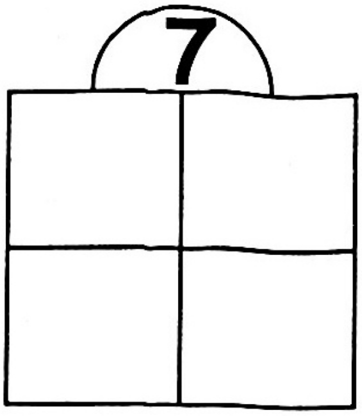

इसके शीर्ष घर में अंक 7 है जो कि बाहर्य तौर पर सात ऋषि हैं।
जैसे कि :-
1- कश्यप 2. अत्री 3. भारद्वाज 4. विश्वामित्र 5. विशिष्ठ
6. गौतम 7. जमदगन (जमदग्नि)

दूसरे पक्ष में इसका अर्थ सात दिन भी हैं अर्थात् सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार।

तीसरे बाहर्य पक्ष से यह सात चोटियों का वर्णन है जोकि कैलाश पर्वत पर है।

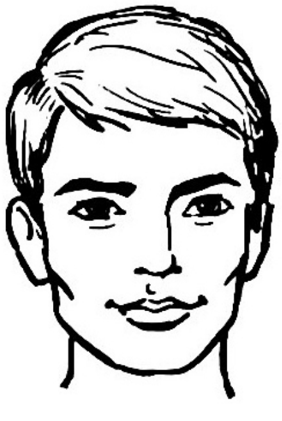

चौथा हमारे शरीर को चोटी अर्थात् गर्दन से ऊपर सात द्वार हैं जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

दो आँखें,
दो नासिकाएँ,
दो कान छिद्र,
एक मुख

जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, निम्न चित्र में इस घर में अंक 2 है

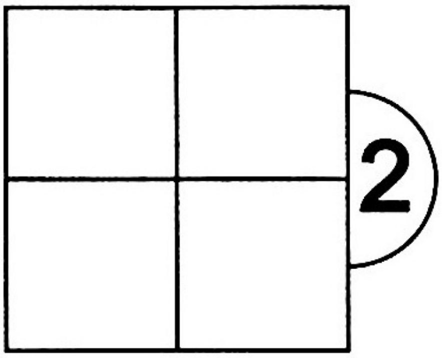

इसका अर्थ है "शिव व शंकर"
शिवः- जन्म दाता, शंकर- विनाश करने वाला
इसका दूसरा अर्थ है दो शब्द अर्थात् वर्णात्मक व धुनात्मक
इसका तीसरा अर्थ है आत्मा व परमात्मा।

निचले घर में अंक 6 है जिसका भावार्थ है छः शस्त्र।

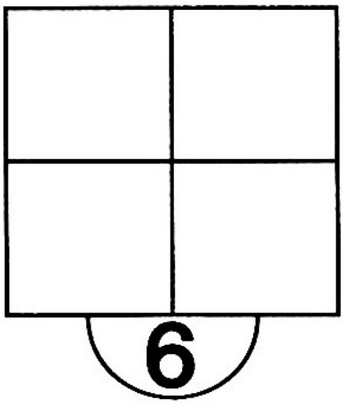

जोकि जीव के पाँव में होते हैं, इनको आध्यात्मिक तौर पर अंजन चक्र भी कहा जाता है, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

ये छः शस्त्र हैं :-

1. धनुष-बाण 2. शँख 3. गदा 4. सुदर्शन चक्र 5. कृपाण 6. त्रिशूल

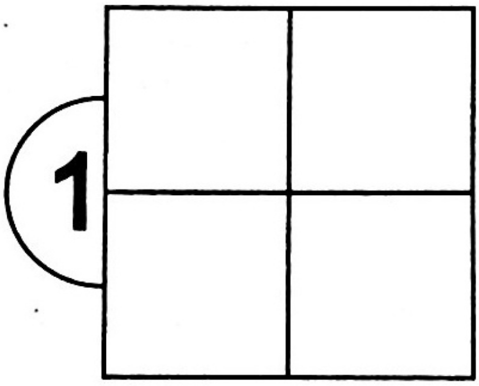

इस घर में 1 अंक है, अर्थात् दाता इस का विवरण आप पिछले पृष्ठों पर विस्तारपूर्वक पढ़ चुके है।

सम्पूर्ण खाके का विवरण इस प्रकार है:-

बाहर्य घरों में नौ निधियाँ व बारह सिद्धियाँ कार्य करती हैं तथा आंतरिक घरों में अंकों का कुल योग 13 है। ये तेरह शक्तियाँ हैं जिनका अलग-अलग विवरण भी पहले समझाया जा चुका है।

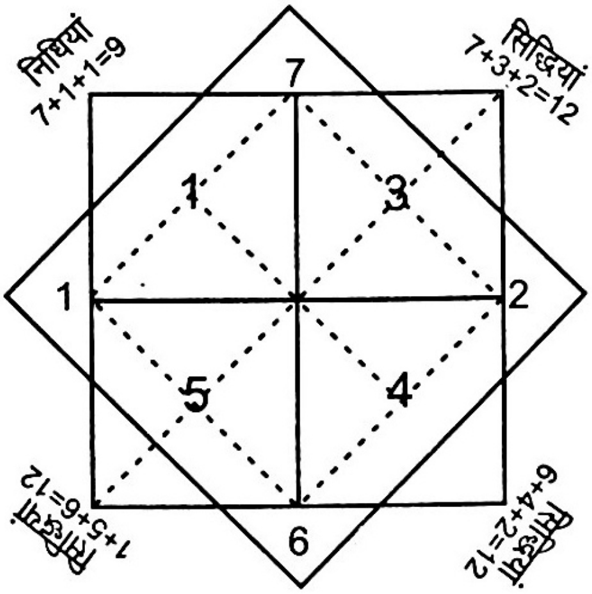

प्रश्नः- महाराज जी, क्या इंसान के अंदर भी दाता का कोई स्थान है? यदि है तो वह कहां है तथा वहाँ कैसे पहुँचा जा सकता है? जरा विस्तार-पूर्वक समझाइए।

उत्तरः- जिस प्रकार दाता ने सृष्टि की रचना की उसी प्रकार उसने हर इंसान में, रचना के समय अपने लिए एक स्थान भी रखा। इसे दसवां द्वार, शिव नेत्र, तीसरा तिल या तीसरी आँख भी कहा जाता है। यह माथे में दो आँखों के मध्य होता है जैसा कि इस चित्र में दिखाया गया है:-

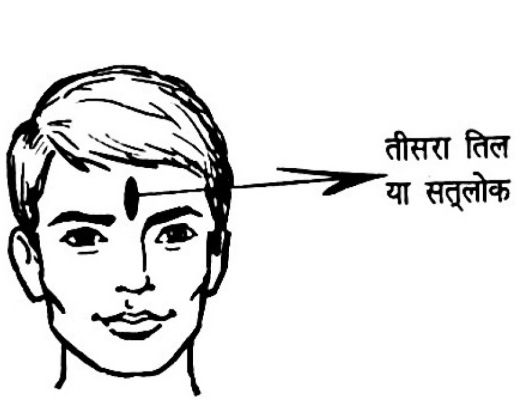

गुरुवाणी भी कहती हैः-

नउु दरवाज नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै।।

ये नौ द्वार हैं- दो आँखें, दो नासिकाएं, दो कान छिद्र, एक मुँह, एक इंद्री व एक गुदा। दसवें में दाता का स्थान है, गुरुमुखी व हिन्दी भाषा में दसवें का अर्थ है- दस।

अर्थात् द + स- दाता

इसमे 'द' का अर्थ है -दाता

द	अर्थात्	- दयालु	अर्थात् दाता ही दयालु है।
द	अर्थात्	- दीन	
द	अर्थात्	- दयावान्	अर्थात् दाता ही दया करता है
स	अर्थात्	- संत	

संत ही सच्चाई है, संत ही सत्य है, संत ही सिद्क है, संत ही सरबत दा भला है, संत ही साधु-संगत है। इससे भाव हैः-

दाता+संत

या यूं कह ले कि दाता का संदेश संत है या संत ही दाता का संदेश है क्योंकि दाता संतों में तथा संत दाता में समाये होते हैं। संत समय-समय पर दाता का संदेश देते रहते हैं। जब तक जीव को संत नहीं मिलते तब तक उसे दाता की प्राप्ति नहीं हो सकती। भगवद् गीता में वर्णन है कि जन का अर्थ होता है भक्त, भक्त का अर्थ है जन। जन का स्वरूप संत हैं तथा भक्त का स्वरूप है भगवान्।

- दाता एक Sentence है।
- संत-महापुरुष एक Statement हैं।
- साधारण जीव एक Syllabus है।
- लोक भलाई संतों का Subject है।

दाता एक Sentence है:-

Sentence अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'वाक्य' (श्लोक)। कुछ शब्दों के उस संग्रह को वाक्य कहा जाता है जिसका पूरा अर्थ निकलता हो। क्योंकि दाता भी अपने आप में हर पक्ष से पूर्ण है इसलिए वह Sentence है।

संत-महापुरुष एक Statement हैं:-

जिस प्रकार समयानुसार किसी भी नेता का व्यक्तव्य (Statement) बदलता रहता है उसी प्रकार संत-महापुरुष एक व्यक्तव्य हैं जो ईश्वर के घर की आवाज समय-समय पर जीवों तक पहुँचाते रहते हैं। वे ही साँसारिक जीवों को समझाते हैं कि अब इस समय में ईश्वर के घर में स्वीकार होने के लिए क्या करना चाहिए। जिस प्रकार मुद्रा उसी सरकार की चलती है जिसका शासन हो, दूसरी की नहीं जो पदच्युत हो, उसी प्रकार, उसी महापुरुष की ईश्वरीय घर में मानी जाती है जो उस समय धरती पर कार्यरत् हो तथा वही जीव की सही मार्ग पर चलने में मदद कर सकता है, समझा सकता है।

आम जीव एक Syllabus है:-

संत-महापुरुष कर्म कमाने के लिए धरती पर आते हैं और साधारण जीव कर्म भोगने के लिए जन्म लेता है। साधारण जीव अपने संस्कारों के कारण जन्म लेता है परन्तु संत-महापुरुषों को ईश्वर भेजता है और वह उसके आदेश से धरती पर आते हैं।

साधारण जीव को कब दुख और कब सुख मिलना है इसका लेखा उसके प्रारब्ध के अनुसार बना होता है और उसी के अनुसार उसे जीवन में दुख-सुख मिलते रहते हैं। परन्तु जब वह किसी पूर्ण पुरुष की दृष्टि में आ जाता है तो वह पूर्ण पुरुष उसके लेखे में अदल-बदल कर सकते हैं। वह उससे नाम-कमाई या लोक भलाई या साध-संगत की सेवा में लगाकर उसके किए हुए बुरे कर्मों को नाम स्वरूप अग्नि से जला कर रख देते हैं जैसे एक माचिस की तीली से हजारों मन लकड़ी जल जाती है। पूर्ण पुरुष जीव के दुखों की सूली को शूल बना कर भुगतान करवा देते हैं। इसी प्रकार सारी सृष्टि का लेखा (Syllabus) बना हुआ है। सूरज, चाँद, सितारे, हवा, पानी, आग का भी लेखा है। सूरज को कब उगना है, कब छुपना है, वह सब उस लेखे के अनुसार होता है।

लोक भलाई संतों का Subject है :-

जितने भी संत महात्मा, महापुरुष धरती पर आए हैं उन सबका एक ही विषय (Subject) होता है कि जीव की इस आत्मा को उस परमात्मा, दाता के साथ जोड़ना जोकि कई युगों से उससे बिछुड़ी हुई है। उनका विषय है लोक-भलाई करना और दूसरे जीवों को लोक-भलाई के लिए प्रेरित करना और उन्हें लोक-भलाई करने का सीधा रास्ता बताना जिससे जीव के कर्म बनते जाते हैं। उनका विषय है जीवों को सत्य, सेवा, साध-संगत, सरबत्त दा भला, शहादत (विकारों की) और सिदक सिखाना या दूसरों के लिए जीने का तरीका सिखाना। संतों के बिना दुनिया को बचाने वाली कोई शक्ति नहीं जोकि जीव को नर्कों की अग्नि में जलने से तथा यमों की मार से बचा सके। पलटू साहिब, जोकि एक उच्च कोटि के फकीर हुए हैं, ने कहा है:-

अगनी चढ़ी आकाश पे, बरस पड़े अंगार,
संत न होते जगि महि तो जल मरता संसार।।

"कुण्डलियाँ श्री पलटु साहिब"

पूर्ण संत जीवों को परस्पर प्रेम, भाईचारा सिखाता है। जो संत जीवों को आपस में लड़ने-मरने, जाति-पांति, मज़हब-कौम के झगड़े खड़े करके आपस में लड़ना सिखाता है वह संत नहीं हो सकता। वह संत नहीं हो सकता जिसके दरबार में जाकर मन को शांति न मिले। वह संत नहीं हो सकता जिसके दरबार में जीव के भ्रम दूर न हों। वह संत नहीं हो सकता जिसके दरबार में जाकर जीव के कर्म न काटे जाएँ। वह संत नहीं हो सकता जो गिरे हुए जीव को न उठाकर उसे ठोकर मार दे। वह पूर्ण संत नहीं हो सकता जिसके दरबार में जीव की प्रत्येक मुराद न पूरी होती हो क्योंकि यह उन पूर्ण संतों का विषय है।

संत-महापुरुष के विषय में यह भी होता है कि उनके दरबार में चाहे चोर-ठग, बदमाश या कितने ही पापों से भरा जीव चला जाए, वे उसे गले से अवश्य लगाते हैं। उसे अपने प्रेम के माध्यम से गलत रास्ते से हटाकर सीधे रास्ते पर लाकर एक निर्मल इंसान बनाते हैं। उसके बुरे कर्मों को न देखकर उस पर पर्दा डालते हैं क्योंकि यदि संत-महात्मा ही जीव के गुनाह पर पर्दा न डालें तो दुनिया में और कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो जीव पर पर्दा डाल सके। चाहे उन पर कितनी ही उंगलियाँ उठें वे उस जीव को नहीं छोड़ते क्योंकि ये सब चीजें उनका विषय (Subject) हैं।

अब गिनती के पक्ष से देखें तो 1 + 0 -10

अर्थात् पहला अंक 1 दाता का है क्योंकि दाता एक है। जैसा कि आरम्भ में ही बताया गया है या यों कह लें कि दाता सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। यदि वह नहीं है तो कुछ भी नहीं है। बाकी सारी सृष्टि शून्य के समान है। चाहे कितने ही शून्य क्यों न एकत्र कर लिए जाएं उनका कोई मूल्य नहीं, जब तक अंक 1 उनके साथ नहीं जुड़ता। यदि दस या बीस शून्य भी एकत्रित कर लिये जाएं तो भी उनका कोई मूल्य नहीं है क्योंकि उनके साथ अंक 1 नहीं होता। हमें हर हालत में एक के समावेश को मान्यता देनी ही होगी क्योंकि यह अंक 1 की गिनती उस दाता के लिए प्रयोग की गई है। कुछ लोग अपनी बुद्धि को दाता की बुद्धि से तीक्ष्ण समझने लग जाते हैं अर्थात् दाता को पीछे छोड़ कर अपने आप को आगे करते हैं परन्तु वे फिर भी किसी गिनती में नहीं आते। जैसे कि यदि पहले शून्य लगाकर फिर अंक 1 का प्रयोग किया जाए, भावार्थ- 0001 – तो यह पढ़ने में 1 ही गिना जाएगा। परन्तु यदि इसी गिनती में अंक 1 पहले लगाकर फिर शून्यों का समावेश किया जाए तो गिनती एक हजार की बन जाती है। इस प्रकार हरेक शून्य के समावेश के साथ ही साथ गिनती पहले से दस गुना होती जाएगी। इसी प्रकार जो जीव सर्वप्रथम दाता को मुख्य रखकर बाद में अपना आप लाते हैं, दाता उनकी हर पक्ष से सहायता करता है व उसके भण्डार में किसी प्रकार की कमी नहीं आने देता तथा जीव को हर पक्ष से सफलता की प्राप्ति होती है परन्तु जो उस दाता को भूल कर अपनी चतुराई तथा बुद्धिमत्ता के बल से सफलता प्राप्त करना चाहते हैं वह सदैव ही गिरते हैं क्योंकि हम सब जीव उस दाता के बिना शून्य हैं। हमारी आत्मा का इस धरती पर आना तभी सार्थक हो सकता है यदि हम दाता को अपने से पहले प्रमुखता दें। उस दाता के बिना हमारा मूल्य एक कौड़ी भी नहीं है।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि यदि दाता का स्थान दसवें द्वार में है तो वहां कैसे पहुँचा जा सकता है? अर्थात् यदि हम, सृष्टि के समस्त जीव शून्य हैं तो हम अपने एक (1) को (क्योंकि 1 को दाता माना गया है) कैसे मिल सकते हैं?

इंसान की आत्मा पैरों के रास्ते शरीर में प्रविष्ट होती है व प्राण भी पैरों के रास्ते ही निकलते हैं। आत्मा का वास जीव के दाएँ पैर के अँगूठे में होता है। वहीं से आत्मा शरीर में आती है व निकलने का रास्ता भी वही है। साधारण जीव सोचते हैं कि शायद आत्मा नाक, मुँह या किसी और द्वार से निकलती है, परन्तु

ऐसा नहीं है। हमारे पैरों में अँजन चक्र है जिसको आवागमन-चक्र भी कहते हैं। इसमें गदा, शँख, धनुष-वाण, त्रिशूल, कृपाण व सुदर्शन-चक्र हैं। इसी कारण बुजुर्गों या किसी संत-महापुरुष के पैरों पर मात्था टेका जाता है।

इसका आसन है आलती-पालथी मार कर दायीं एड़ी को बायीं जांघ पर तथा बायीं एड़ी को दायीं जांघ पर रखा जाता है जैसा कि इस चित्र में दिखाया है। यह आसन आमतौर पर योगी लोग करते हैं। गुदा में गणेश का वास है तथा यहाँ का शब्द "कंलिगा" है। इस शब्द का रोज एक लाख पच्चीस हजार बार जाप करने से यह वश में हो जाता है चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री।

दूसरी अवस्था :-

फिर योगी लोग अँजन चक्र से उठकर कमल-नेत्र तक आते हैं। यह गुदा से होकर नाभि तक का हिस्सा हैं जहाँ एक हजार पत्तियों वाला कमल हैं जिसके मध्य में एक काला सा तिल है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। बहुत से योगी यहीं आकर टिक जाते हैं तथा काले तिल के दीवाने बन बैठते हैं और इससे आगे जाने का प्रयास ही नहीं करते। क्योंकि वे समझ लेते हैं कि शायद यही अंतिम स्थान है। यहां पहुँच कर वे स्वयं तो आनंद ले सकते हैं परन्तु किसी दूसरे को कुछ नहीं दे सकते। यहां विष्णु का वास है तथा यहाँ का शब्द "सारंग" है। योगी लोग "सारंग-सारंग" का जाप करते रहते हैं। विष्णु का परिधान पीला है तथा शरीर आसमानी रंग का है। यहाँ सारंग धुन की आवाज है परन्तु "सचखण्ड नानक धाम" की नामी शक्ति ने यहां का शब्द "प्रभ" रखा है।

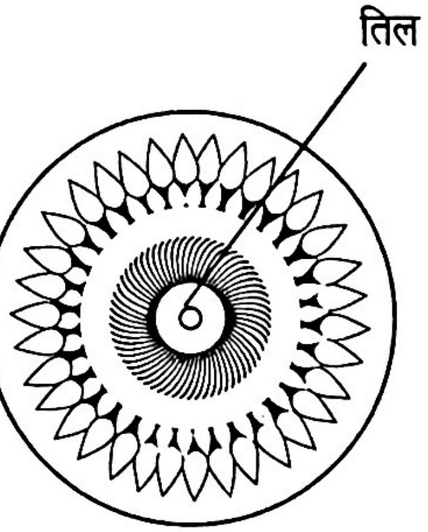

तीसरी अवस्थाः-

इससे ऊपर नाभि से हृदय तक की यात्रा है। कुछ योगी केवल नाभि तक ही पहुँच पाते हैं तथा उसके तिल के दीवाने बने रहते हैं जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है परन्तु जो योगी थोड़ा सा प्रयास और करते हैं, वह नाभि से आगे हृदय तक पहुँच जाते है। इसे दिल भी कहते हैं। हृदय का स्वामी ब्रह्मा है, उसके वस्त्र

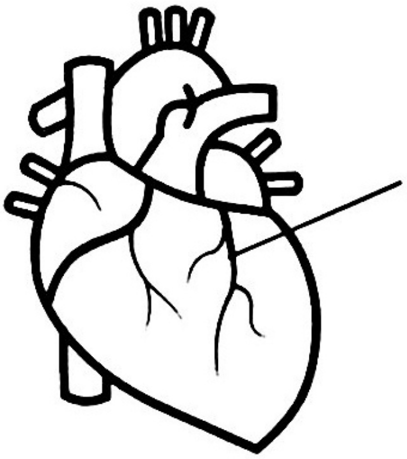

पीले तथा शरीर साधारण ही है। यहाँ भी "सारंग-सारंग" की ही धुन बजती है। परन्तु "सचखण्ड नानक धाम" की नामी शक्ति ने हृदय की इस धड़कन को "अबिनासी" नाम दिया है। इसको "त्रिकुटी" भी कहते हैं।

यहाँ पहुँचकर योगियों की कही 90 प्रतिशत बातें पूर्ण हो जाती हैं। उदाहरण के तौर पर यदि किसी के घर संतान नहीं होती और यदि त्रिकुटी तक पहुँचे योगी ने कह दिया कि जाओ संतान हो जाएगी तो संतान हो जाती है परन्तु इस बात का कोई आश्वासन् नहीं कि संतान लायक ही होगी। संत-महात्माओं की कृपा से हुई संतान कभी नालायक नहीं होती। वह बहुत ही ऊँची व पवित्र आत्मा होती है जो माता-पिता का नाम रोशन करती है। इसीलिए शीघ्रता से संत-महात्मा संतान का वचन जीव को नहीं देते या यूं कह ले कि उनके दरबार से संतान प्राप्ति हेतु बहुत परिश्रम व सेवा की आवश्यकता होती है। जब तक संतान मांगने वाले जीव के घर का सारा वातावरण उनके नियमानुसार न हो वे तब तक अपने खजाने की आत्मा को उस घर में नहीं भेजते।

चौथी अवस्थाः-

जीव की चौथी अवस्था सुन्न है। कभी-कभी नाम सुमिरन करने से शरीर सोने लगता है और यहाँ तक कि सारा शरीर ही सो जाता है परन्तु चेतना अवश्य बनी रहती है। बाहर्य आवाजें भी सुनाई देती हैं। कई बार सारी सुध-बुध खो जाती है अर्थात् यदि कपड़े डाले हैं तो कोई बात नहीं, और यदि नहीं डाले तो भी कोई बात नहीं। भोजन किया है तो ठीक है, नहीं किया है तो भी ठीक है, अर्थात् मस्तानापन सा छा जाता है।

पाँचवी अवस्थाः-

इसे महासुन्न कहते हैं। यह अवस्था भी लगभग चौथी अवस्था जैसी ही है। परन्तु इस अवस्था में छोटे-छोटे बाग-बगीचे, फव्वारे, रोशनी तथा गुरु के स्वप्न आने लगते हैं। ईश्वर की ओर ध्यान लगा रहता है। यह संसार अच्छा नहीं लगता, जिस प्रकार भाई मती दास के सिर पर आरा चल गया परन्तु उसे कुछ पता न चला, न ही दर्द हुआ। यह महासुन्न की अवस्था है कि शरीर के साथ चाहे जो होता रहे, जीव को कुछ पता नहीं चलता।

छठी अवस्था :-

जीव की छठी अवस्था "भंवर गुफा" है। आँखों के नीचे कण्ठ तक भँवर गुफा का हिस्सा है। इसका स्वामी शेषनाग है। इसे स्वाँस-नली भी कहते हैं। साँप की कौड़ी की भांति गले में एक काला सा निशान होता है जिस प्रकार कि चित्र में भी दिखाया गया है। इसका स्वामी नारायण है, उसे सत् नारायण भी कहते हैं, साथ लक्ष्मी शक्ति है जिसे अष्टभुजी शक्ति भी कहा जाता है। इनका आसन नौ सिरों वाला शेषनाग है। नारायण व लक्ष्मी पातालवासी हैं। मुसलमान इसे साँस-रग भी कहते हैं।

इससे ऊपर चार लोक हैं:- 1. सत् लोक, 2. अलख लोक, 3. अगम लोक, 4. अहक लोक।

कई योगी रीढ़ की हड्डी के माध्यम से भी अलख लोक तक पहुँचते हैं। रीढ़ की हड्डी एक कड़ीदार रस्सी की भांति है। इसके माध्यम से कई योगी अंदर प्रविष्ट होते हैं। वे लोग स्वयं तो नजारे देख सकते हैं परन्तु इनका दसवाँ द्वार नहीं खुलता जहाँ से दाता को देखा जा सकता है। योगी लोग अनीमा के द्वारा गुदा को साफ करते हैं। कई योगी मुँह में कपड़ा डालकर स्वाँस नली को साफ

करते हैं। कई योगी नाक में से रस्सी डालकर मुँह में से निकालकर आगे-पीछे सरका कर सफाई करते हैं और इसी प्रकार योग कमाते हैं।

प्रश्न- महाराज जी, अभी आपने योगियों की अवस्था बताई है परन्तु आम जीव के लिए यह मार्ग अपनाना बहुत कठिन है। कृपया बतायें कि गृहस्थ या साधारण जीव को उस दाता के दर्शन हेतु क्या करना चाहिए?

उत्तर- साधारण जीव का गृहस्थ आश्रम में रहकर दाता के दर्शन करने का सरल सा साधन है कि किसी पूर्ण संत की शरण में जाए तथा उससे नाम की प्राप्ति करे क्योंकि संत-महापुरुष जब अपने सेवक को नाम देते हैं तो उसे "त्रिकुटी" तक पहुँचा देते हैं। संत-महापुरुषों तथा योगियों के रास्तों व साधनों में बहुत अंतर होता है। योगी लोग पैरों से चलकर दसवें द्वार तक जाते हैं, जैसा कि पहले बताया जा चुका है परन्तु पूर्ण महापुरुष के सेवकों को इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती। क्योंकि वह नाम देकर सेवक को सीधा मस्तिष्क अर्थात् सत् लोक में ले जाकर खड़ा कर देते है। इस प्रकार वह नाम कमाई करके अपने दाता के दर्शन कर सकता है। फिर वह दसवें द्वार के प्रकाश में निचले समस्त घरों को देख सकता है। पूर्ण पुरुष अपने सेवक को वर्णात्मक शब्द देते हैं, जिसका सुमिरन करने से जीव अपने अंतर में निरंतर बज रहे धुनात्मक शब्द के साथ जुड़ जाता है। इसे अनहद शब्द भी कहते हैं। यह बोलने, लिखने, पढ़ने में नहीं आता है। वर्णात्मक शब्द अवश्य ही लिखने, पढ़ने में नहीं आता है। सारॉँश यह कि दाता के दर्शन किसी पूर्ण-पुरुष के माध्यम से ही हो सकता है। (नाम, शब्द अथवा गुरु मंत्र का सम्पूर्ण विवरण जानने के लिए "मार्ग दर्शन" भाग-1 पढ़ें।)

प्रश्न- महाराज जी, सुमिरन क्या है?

उत्तर- वास्तव में सुमिरन का अर्थ है स्मरण करना अथवा याद करना। दुनिया में रहकर, दुनिया के काम-काज करते हुए अपने वास्तविक कर्त्तव्य, कार्य, मकसद को याद रखना। जिस प्रकार गाँव में लडकियाँ कुएं से पानी भरकर लाती हैं। एक-एक लड़की के सिर पर एक के ऊपर एक, दो-दो, तीन-तीन घड़े टिके हुए होते हैं इसी अवस्था में वह लड़कियाँ घड़ों पर बिना हाथ रखे, आपस में

बात-चीत करती आती हैं, परन्तु उनका ध्यान घड़ों में ही होता है कि कहीं घड़ा सिर से गिरकर टूट न जाए। दूसरी ओर चरखे पर सूत कातते समय भी लड़कियाँ आपस में हँसी किलोल करती हैं परन्तु कहीं सूत टूट न जाए, उनका पूरा ध्यान सूत की तार में ही होता है ठीक इसी प्रकार साँसारिक कार्य करते हुए अपने प्रियतम की ओर ध्यान रखने को ही सुमिरन कहते हैं जैसेः-

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संमालि।।
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि।।

इसी प्रकार जीव का वास्तविक मंतव्य किसी गुरु की तलाश करके उसके माध्यम से ईश्वर को मिलना है। ईश्वर की याद ही सुमिरन है अथवा गुरु को सच्चे दिल से याद करना ही सुमिरन है। इसके साथ ही साथ गुरु द्वारा अंकित कर्त्तव्य का पालन भी सुमिरन है।

प्रश्न- **महाराज जी सुमिरन करने का सही समय कौन सा है? तथा सुमिरन कैसे करना चाहिए?**

उत्तर- जब जीव को नाम प्राप्त हो जाता है तो प्राकृतिक तौर पर उसे शांति का आभास होता है तथा उसकी बाहर्य भटकन प्रायः घट जाती है फिर जीव के अंदर उस सच्चे दाता के दर्शन की ललक पैदा हो जाती है।

अब प्रश्न यह है कि सुमिरन किस समय किया जाना चाहिए?

वैसे तो सुमिरन चलते-फिरते, उठते-बैठते किसी भी समय किया जा सकता है क्योंकि आठों पहर दाता के है परन्तु किसी खास लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बैठकर सुमिरन करना बहुत आवश्यक है। जैसे साँसारिक तौर पर हरेक पाठशाला, विद्यालय या फैक्ट्री का समय होता है उसी प्रकार ईश्वर के घर का भी एक समय है। जो बच्चा समय के पश्चात् पाठशाला जाता है वह पढ़ाई तो कर लेता है परन्तु उसकी उपस्थिति नहीं गिनी जाएगी। पढ़ तो वह किसी भी समय सकता है। इसी प्रकार ईश्वरीय घर "सचखण्ड" के द्वार सुबह, प्रभात के समय 3 बज कर 35 मिनट पर खुलते हैं। जो जीव इस समय सुमिरन में व्यस्त होते हैं

उनकी हाज़िरी ऊपर के घर में सीधी लगती है। प्रातः 3:35 से लेकर 4.00 बजे तक देवताओं का भ्रमण मृत्यु लोक में होता है इसलिए सुमिरन का सही समय यही है। आगे-पीछे किया गया सुमिरन भी जीव के ईश्वरीय भण्डार में जमा होता है परन्तु किसी खास लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीव को बैठकर सुमिरन करना बहुत आवश्यक है।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि पूर्ण संत जीव को नाम दे कर सीधा सत्-लोक तक पहुँचा देते हैं क्योंकि आत्मा का वास जीव के दाएँ पाँव के अँगूठे में होता है (इसीलिए साँसारिक तौर पर सदैव पाँव पर ही मात्था टेका जाता है।) तथा आत्मा को आध्यात्मिक यात्रा करने के लिए यहीं से चलना पड़ता है। इस यात्रा को आत्मा सुमिरन द्वारा ही तय कर सकती है।

अब प्रश्न यह है कि सुमिरन कैसे करें?

सुमिरन के लिए अलग कमरा हो, जमीन पर आसन हो तथा पूरी पवित्रता हो जिसमें आम जीव गंदे-मंदे हाथों से न जाए। उसके पश्चात् आलती-पालथी मारकर बैठकर नाम जपना चाहिए। नाम जपते समय जीव का ध्यान दोनों आँखों के बीच तथा गुरु के चरणों की ओर होना चाहिए। पहले-पहल जीव के लिए बैठना बहुत कठिन होता है क्योंकि मन नहीं टिकता, मन की तरंगें तथा मन के विचार जीव को बैठने नहीं देते इसलिए शुरू-शुरू में रोजाना एक निश्चित समय पर जीव को बैठना अति आवश्यक है, चाहे वह पाँच मिनट ही बैठे। उसके बाद रोज अभ्यास से शनै-शनै मन टिकने लगता है। पहले-पहल नाम कमाई से शरीर टूटता है तथा जम्हाईआं आती हैं। मन कभी कहीं भागता है तो कभी कहीं क्योंकि नाम सुमिरन से जीव के विकार टूटते हैं। फिर धीरे-धीरे टांगों से शुरू होकर शरीर सुन्न होना शुरू हो जाता है। बाँहें सो जाती हैं तथा आत्मा नाम कमाई करती हुई दाएं पाँव के अंगूठे से चलकर कण्ठ तक पहुँच जाती है। इसके पश्चात् वह अवस्था आती है जब इस आत्मा को स्वाँस नली अर्थात् भंवर गुफा में से गुजर कर जाना पड़ता है। यहां आकर जीव को कई बार ऐसा आभास होता है जैसे वह किसी कुएं में गिर पड़ा हो। यहीं आकर काफी जीव भयवश अपना भजन-सुमिरन त्याग बैठते हैं। इस समय जीव को अपने गुरु का ध्यान अपने समक्ष रखना चाहिए तथा गुरु के संकेत को

देखना चाहिए। हर मंजिल, हर पड़ाव पर गुरु साथ होता है तथा उसी के संकेत को समक्ष रख के जीव को बिना किसी डर या भय के सुमिरन करते रहना चाहिए। इसके बाद जीव सीधा सत् लोक तक पहुँचता है। यहाँ आकर जीव एकदम शांत हो जाता है, यहां आनन्द ही आनन्द है। किसी भी बाहर्य वस्तु की इच्छा नहीं रहती अर्थात् समस्त इच्छाएँ सम्पूर्ण हो जाती हैं परन्तु प्रीतम से मिलने की ललक बनी रहती है। हर कही हुई बात सच होने लग जाती है। जीव एक स्थान पर बैठकर सारी दुनिया को देख सकता है। इसे दसवां द्वार भी कहा जाता है। यहीं पर बूँद-बूँद अमृत टपकता है जिसे पीकर आत्मा शांति प्राप्त करती है बाणी में भी कहा गया है:-

नऊं दरवाज नवे दर फीके रस अमृत दसवै चुईजे।।
अथवा
झिमि झिमि वरसे अमृत धारा।।

प्रश्न- **महाराज जी, अभी जो आपने सत्-लोक से आगे अलख लोक, अगम लोक का वर्णन किया है। क्या कोई जीव अपनी कमाई से वहां पहुँच सकता है? यहां के क्या-क्या नजारे हैं?**

उत्तर- साधारण अभ्यासी जीव केवल सत्-लोक के नजारे ही ले सकता है क्योंकि यहाँ आकर जीव को आनन्द मिलता है तथा वह इसी अवस्था में ही लीन रहता है परन्तु यदि गुरु चाहे तो वह अभ्यासी जीव को अलख-लोक के नजारे दिखा सकता है जहाँ पारब्रह्म दाता का नूर है। न यहाँ भूख है न प्यास, न आना है न जाना, बस प्रकाश ही प्रकाश है।

इसके आगे अगम लोक है जहाँ जीव जीते जी बहुत कम जा सकता है, परन्तु कई नाम लेवा जीवों को मरते समय अगम लोक की शब्द झंकार कानों में सुनाई देती है। इस लोक से ही ईश्वरीय इलहाम पैदा होता है।

इससे आगे अहक लोक है। यहाँ तक साधारण जीव की पहुँच नहीं है। वहाँ केवल एक निरंकार ज्योति जिसे ध्वनि व प्रकाश (Light & Sound) कहते हैं। आज तक वहाँ केवल कबीर साहिब व गुरु नानक देव जी ही पहुँचे हैं। भक्त रविदास जी की पहुँच भी वहाँ तक है परन्तु वे केवल दर्शन करके वापस आ जाते हैं।

प्रश्न- महाराज जी, मन क्यों भटकता है तथा इसे कैसे वश में किया जा सकता है?

उत्तर- मन संसार की सुन्दर वस्तुओं को प्राप्त करने का सदा से इच्छुक रहा है। दिन प्रतिदिन उसकी ये इच्छाएँ बढ़ती ही जाती हैं जिनका कोई अंत नहीं। जैसे कि किसी वस्तु की इसने चाह की, फिर उसे प्राप्त करने हेतु अच्छे-बुरे साधन सोचता रहा तथा जब इच्छा पूर्ण हो गई तो कुछ देर उपरान्त दूसरी इच्छा पैदा हो गई। फिर दूसरी इच्छा को पूरी करने हेतु यह हाथ-पांव मारने लगा, अर्थात् इसी प्रकार उसकी इच्छाएँ बढ़ती ही जाती हैं, कभी समाप्त नहीं होती। यही कारण है कि यह सदैव भटकता रहता है।

दूसरी बात यह है कि इसे वश में कैसे किया जा सकता है?

मन त्रिकुटी का निवासी तथा ब्रह्मा का अंश है। इसे इंद्र का रूप भी कहते हैं। इसका यह कार्य है कि कभी भी जीव को सीधे रास्ते पर न चलने देना। जो कार्य मन करता है यह वास्तव में "काल" (शैतान) का कार्य है तथा यह अपने कार्य में निपुण है। इसने बड़े-बड़े साधु-फकीरों पर भी वार किया है परन्तु पूर्ण-पुरुष के समक्ष इसकी एक नहीं चलती। इसे वश में करने के लिए प्रत्येक महापुरुष ने जीव स्वरूप आत्मा को जोर दिया है। गुरु नानक देव जी की वाणी भी इसकी हामी भरती है कि यदि जग जीतना हो तो पहले मन पर विजय प्राप्त करो।

मन जीते जगु जीतु।।

परन्तु मन कोई छोटी-मोटी शक्ति नहीं है जो इतनी सरलता से वश में आ जाए। हर जीव के अन्दर मन है तथा यह वश में तभी हो सकता है जब किसी पूर्ण-पुरुष की कृपा-दृष्टि जीव पर हो। जैसे कि-

दस दिस खोजत मै फिरिऊ जत देखऊ तत सोइि।।
मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइि।।

अर्थात् पूर्ण-पुरुष की कृपा के बिना मन वश में नहीं आ सकता।

दूसरा उदाहरण इस प्रकार दिया जा सकता है कि जीवों को अपने गुरु के चरणों में मन जोड़ना चाहिए अर्थात् उसके चरणों का सहारा लेना चाहिए। वाणी का भी यही फैसला है :-

चित चरन कमल का आसरा चित चरन कमल सँग जोडीए
मन लोचै बुरिआईयां गुर सबदी मन होड़ीए।।

अर्थात् मन सदैव बुरे कामों की ओर दौड़ता है जैसे कि कौवा सदैव गंदगी पर ही बैठता है परन्तु गुलेल से बहुत डरता है। जैसे ही कौवे की ओर गुलेल की जाए वह भाग जाता है। हमारा मन भी कौवे के समान है। बुरे कर्मों की ओर पहले जाता है परन्तु जब गुरु की शब्द (नाम) स्वरूप गुलेल इसे दिखाई जाए तो यह वापस हो लेता है। बार-बार यही क्रिया दोहराने से यह मान जाता है। दूसरा उदाहरण कुछ इस प्रकार दिया जा सकता है।

एक बार एक राजा ने ढौंढी पिटवाई कि जो भी मेरी भैंसों को पेट भर चारा खिला कर लाएगा मैं उसे आधा राज्य सौंप दूँगा परन्तु यदि कोई प्रत्याशी ऐसा करने में असफल रहा तो उसका वध कर दिया जाएगा। यह ऐलान सुनकर बड़े-बड़े चरवाहे आए परन्तु जब वे सारा दिन भैंसों को चरवा कर शाम को बाड़े में लाते तो राजा अपने नौकरों से कहता कि भैंसों के आगे घास डालो। घास डालते ही भैंसें घास पर टूट पड़ती तथा चरवाहे का वध करवा दिया जाता, इसी प्रकार कई चरवाहे मारे गए।

एक दिन एक चरवाहा आया और उसने भैंसों को चरवाने के लिए ले जाने की बात राजा से की। वह भैंसों को एक बंजर मैंदान में ले गया तथा उनके आगे घास का गट्ठर खोल दिया तथा हाथ में लट्ठ लेकर सामने खड़ा हो गया। अब जैसे ही भैंसें घास खाने के लिए मुंह नीचे करें, चरवाहा उनके नाक पर जोर से लट्ठ रसीद कर दे। इसी प्रकार सारा दिन बीत गया तथा भैंसों के नाक लट्ठ खा-खाकर सूज गए।

शाम को जब भैंसें बाड़े में लाई गईं तो राजा के आदेश पर वही प्रक्रिया दोहराई गई परन्तु इस बार चरवाहा हाथ में लट्ठ लेकर भैंसों के सामने खड़ा हो गया। इस बार भैंसें घास के साथ-साथ चरवाहे के लट्ठ को चोरी-चोरी देख रही

थी परन्तु घास को मुँह लगाने की हिम्मत किसी में भी न थी। इस प्रकार वह चरवाहा आधे राज्य का स्वामी बन गया।

इस उदाहरण से नतीजा यह निकलना है कि हमारा मन भी उन भैंसों के समान है। जैसे ही कोई सुन्दर सूरत या कोई सुन्दर वस्तु दिखी उसी ओर उठ भागा। परन्तु यदि ज्ञानस्वरूप डंडा अर्थात् गुरुशब्द (नाम) स्वरूप लट्ठ आपके पास है तो वह बुरे कर्मों से पीछे हट जाता है तथा वश में आ जाता है। जैसे ही गुरु को भुलाया, यह फिर सक्रिय हो जाता है तथा जीव का जीवन बर्बाद कर देता है।

इसलिए, गुरुशब्द (नाम) स्वरूप लट्ठ का होना अति आवश्यक है।

प्रश्न- महाराज जी, सच्ची राह पर चलने की जिज्ञासा कैसे जागृत हो सकती है जब तक कोई चमत्कार न देखा जाए?

उत्तर- जिस प्रकार सांसारिक तौर पर बेकार रहने से भूख बहुत कम लगती है चाहे जितनी मर्जी भूख के स्वप्न लेते रहो परन्तु यदि आप व्यायाम करते हो तो आपको अपने आप भूख लगती है ठीक इसी प्रकार ईश्वर का स्मरण करने वाले प्राणी को आत्मिक भूख अवश्य लगेगी। इसलिए चमत्कार देखने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि चमत्कार ईश्वर के घर में प्रलय माना जाता है।

प्रश्न- महाराज जी, आम तौर पर कहा जाता है कि जितने भी अच्छे-बुरे कर्म होते हैं वह ईश्वर करवाता है, आदमी नहीं करता। जैसा कि गुरुबाणी में भी आता है-"करे करावै आपे आपि"।

उत्तर- हम इस बात से सहमत हैं कि गुरुवाणी में यह प्रसंग है कि आदमी के वश में कुछ भी नहीं, जो करवाता है, ईश्वर ही करवाता है। परन्तु यह बात साधारण जीवों पर लागू नहीं होती सिवाये संत-महात्माओं के या उन जीवों के जो उस वाहेगुरु, परमात्मा की रज़ा में आ चुके हैं या यों कह लें कि उस (ईश्वर) की प्रत्येक रज़ा के साथ सहमत हो चुके हैं। इसलिए गुरुवाणी का यह दृष्टांत उपरोक्त जीवों के लिए ही है, साधारण सांसारिक जीवों के लिए नहीं। यह उन

लोगों के लिए नहीं है जो अपने स्वार्थो के कारण वास्तविक स्वामी को भूल बैठे हैं, ऐसे लोगों पर गुरुवाणी का यह प्रसंग सही नहीं बैठता। ये लोग अपने निजी स्वार्थों के लिए जो भी बुरे-भले कर्म करते हैं, ईश्वर इन्हें वैसा ही फल देता है, देता आया है और देता रहेगा।

प्रश्न- महाराज जी, प्रेम की वास्तविक अवस्था क्या है?

उत्तर- प्रेम की वास्तविक अवस्था तब आरम्भ होती है जब प्रेम करने वाला जीव दुनिया के सामाजिक बंधनों के ऊपर उठकर अपने प्रेम की खातिर इन वस्तुओं की परवाह न करता हुआ प्रेम करे। जिस प्रकार जब कृष्ण भगवान की बहन सुभद्रा को पता लगा कि उसका भाई आया है तो अपने भाई के आने की खुशी में इतनी मस्तानी हो गई कि उसे यह भी ध्यान न रहा कि वह नहा रही है, तथा उसी प्रकार नग्न अवस्था में कृष्ण भगवान को मिली। वह कृष्ण भगवान् के प्रेम में इतनी मग्न हो गई कि उसने सामाजिक बंधनों की भी कोई परवाह न की।

प्रश्न- महाराज जी, सत्य का सम्बन्ध आत्मा से है या बुद्धि से?

उत्तर- सत्य का संबंध आत्मा के साथ है, बुद्धि के साथ नहीं। क्योंकि सत्य ईश्वर है तथा बाकी दुनिया के सभी रिश्ते-नाते झूठे हैं। परन्तु ईश्वर

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।

पहले भी सत्य था, अब भी सत्य है तथा भविष्य में भी सत्य रहेगा। आत्मा भी उसी का अंश है। जैसे लोहे से टूटी हुई वस्तु लोहा तथा सोने का अंश सोना ही कहलाएगा उसी प्रकार सत्य (ईश्वर) से बिछुड़ी हुई वस्तु (आत्मा) सत्य है तथा उसका सम्बन्ध सत्य से है। दूसरी ओर बुद्धि इंसान की है जो शरीर के नष्ट होने के साथ-साथ ही नष्ट हो जाती है। कई बार शरीर में रहते हुए भी जीव की सुध-बुध खत्म हो जाती है परन्तु आत्मा अज़र व अमर है।

अधिक बुद्धि वाला जीव कई बार सत्य से बहुत दूर चला जाता है क्योंकि उसे अपनी बुद्धि पर घमण्ड हो जाता है। परन्तु सत्य के साथ जीव ईश्वर की कृपा के माध्यम से ही जुड़ सकता है। इसलिए "मेरे दाता के घर में बुद्धि का

कोई काम नहीं, क्योंकि मेरा दाता बंधनों से मुक्त है। इसीलिए वह अपने दासों पर दया कर देता है क्योंकि मेरा दाता कृपालु व दयावान है।"

प्रश्न- महाराज जी, यदि चलते-चलते जीव के मन में कोई बुरा विचार आ जाए तो क्या ईश्वर के घर में कर्म बन जाता है?

उत्तर- हाँ, वह कर्म बन जाता है। जिस प्रकार सांसारिक तौर पर जब कोई आदमी किसी को मार देता है पुलिस उस पर धारा 302 लगा देती है, जिसमें कई बार गवाहियों की कमजोरियों अथवा अन्य कारणों से दोषी छूट भी जाता है। परन्तु एक केस में पुलिस धारा 307 लगाती है, इसमें दोषी का गुनाह होता है इरादा-कत्ल, परन्तु कत्ल किया नहीं। यह दोष क्षमा होना कठिन होता है। इसी प्रकार बुरा ख्याल आने से जीव का कर्म अवश्य बन जाता है परन्तु पूर्ण-गुरु का सेवक उसे अपनी प्रार्थना द्वारा कटवा सकता है।

प्रश्न- महाराज जी, आप जब भी रूहानी मण्डलों के बारे में बात किया करते हैं तो सतलोक को पहला, दूसरा अलख, तीसरा अगम तथा चौथा अहक बताते हैं परन्तु गुरु ग्रंथ साहिब में सचखण्ड को अंतिम घर बताया गया है, यह क्या कारण है?

उत्तर- सचखण्ड केवल एक ही है जो सबसे ऊपर की अवस्था है। जिसे हम अहक के नाम से याद करते है। दूसरी रही पहली अवस्था की बात, वह है सत्-लोक जिसे हम स्वर्ग या Paradise भी कहते हैं। इसलिए सचखण्ड और सतलोक में बहुत अंतर है।

प्रश्न- महाराज जी, आप कई बार कहा करते है कि ईश्वर बेपरवाह भी है और बापरवाह भी। कृपा करके विस्तारपूर्वक बताएँ कि बेपरवाह किस प्रकार है और बापरवाह किस प्रकार से है?

उत्तर- ईश्वर अपने सच्चे भक्तों, प्रेमियों के लिए बेपरवाह है अर्थात् साँसारिक तौर पर वह उनकी कोई परवाह नहीं करता। इसीलिए, हम कई बार प्रेमियों को कहा करते हैं कि जिस जीव को ईश्वर दुख, दरिद्र, गरीबी दे रहा है, समझो कि वह उसके सच्चे प्रेमी व भक्त हैं क्योंकि मां-बाप ही अपने बच्चों को मार व फटकार सकते हैं दूसरों को नहीं। इसलिए कि दूसरे कभी भी फटकार

सहन नहीं करेंगे। जबकि ये फटकारें उनके सुधार हेतु ही होती हैं। इसी प्रकार ही ईश्वर द्वारा अपने भक्तों को दी गई दुख-मुसीबत उनके अगले घर के सुधार हेतु होती है। तभी ईश्वर अपने भक्तों को साँसारिक सुख देने में बेपरवाही बरतता है।

दूसरे पक्ष में ईश्वर बापरवाह उन लोगों के लिए होता है जो उसके भक्त व प्रेमीजन नहीं होते। उनकी हर बात की यह साँसारिक तौर पर परवाह करता है, सुख देता है। परन्तु ईश्वरीय (आध्यात्मिक) तौर पर नहीं। इसलिए ईश्वर बेपरवाह भी है और बापरवाह भी परन्तु लापरवाह नहीं। लापरवाह आदमी है जो उसके दिए गये सुख-ऐश्वर्य में फँसकर वास्तविक लक्ष्य को भूल जाता है।

प्रश्न- महाराज जी, क्या साधारण जीव ईश्वर की रज़ा में रह सकता है?

उत्तर- नहीं, साधारण जीव मालिक की रज़ा में नहीं रह सकता। उसकी रज़ा में केवल पूर्ण-महात्मा ही रह सकते है या वह जिन्होंने अपने स्वार्थों को त्याग कर अपने बारे में जाना है। केवल वही उस स्वामी की रज़ा में रह सकते हैं, दूसरों के लिए उसकी रज़ा में रहना अति कठिन है।

प्रश्न- महाराज जी, क्या ईश्वर को प्राप्त करने के लिए ही भक्ति आवश्यक है या उसके पश्चात् भी?

उत्तर- जब तक स्वामी के दर्शन नहीं हो जाते तब तक भक्ति करना अति आवश्यक है परन्तु जब उसकी कृपा से जीव को उसके दर्शन हो जाते हैं तो उसकी कृपा की अवस्था को चिरस्थाई बनाने हेतु भक्ति और भी आवश्यक हो जाती है। जिस प्रकार आप दिन-रात परिश्रम करके अपने रहने के लिए एक घर तैयार करते हो तो यदि उसके बाद आप उसकी देखभाल नहीं करते तो एक दिन ऐसा आएगा कि मरम्मत की कमी के कारण वह ढेर हो जाएगा। इसी प्रकार आध्यात्मिक मार्ग है। यदि आप सुमिरन के माध्यम से स्वामी के दर्शन करते हो और फिर सुमिरन छोड़ देते हो तो एक ऐसा दिन आएगा जब आपकी आत्मा फिर से साँसारिक जंजालों में गुमराह हो सकती है।

प्रश्न- महाराज जी, गुरु का स्वरुप क्या है तथा सेवक का क्या स्वरुप है?

उत्तर- गुरु संस्कृत भाषा का शब्द है। गु का अर्थ है अंधेरा तथा रु का अर्थ है प्रकाश। अर्थात् अंधेरे से प्रकाश में ले जाने वाली शक्ति को गुरु कहा जाता है।

यह एक शब्द स्वरुप शक्ति है जिसे गुरु कहा जाता है तथा इस शब्दस्वरुप गुरु में ध्यान लगाने वाली सुरत को सेवक कहा जाता है।

यह आंतरिक अवस्था है, बाहर्य नहीं। जीव को अंतर में प्रवेश करने से सब स्पष्ट हो जाता है।

प्रश्न- महाराज जी, जप-तप, भजन-सुमिरन में क्या अंतर है तथा यह कैसे किए जाते हैं?

उत्तर- जपः- जप का अर्थ है जिह्वा द्वारा बार-बार राम-राम का अभ्यास करना अथवा वाहिगुरु-वाहिगुरु जपना।

तपः- तप से भाव है तपस्या। किसी विशेष आसन पर बैठकर हठ करके अर्थात् मन मार कर तपस्या करना। यह साधारण जीव नहीं कर सकता। इसे अधिकतर योगी लोग हठयोग के रूप में करते हैं।

भजनः- भजन उसे कहते हैं जो गा कर किया जाए अर्थात् ढोलक-बाजे के साथ किया जाए।

सुमिरनः- सुमिरन की चार अवस्थाएँ हैं। सबसे पहले जीव रसना (जिह्वा) से करता है। इसके बाद कंठ द्वारा होता है। उपरांत सुमिरन हृदय में वास करता है तथा अंत में यह जीवों के स्वाँसों में प्रवेश कर जाता है। यह अंतिम अवस्था बहुत महत्वपूर्ण व श्रेष्ठ है। इस अवस्था तक जीव पूर्ण-पुरुष की कृपा के माध्यम से ही पहुँच सकता है।

प्रश्न- महाराज जी, संत, साधु, फकीर तथा फक्कड़ में क्या अंतर है?

उत्तर- संत किसी शरीर का नाम नहीं है। यह एक ईश्वरीय शक्ति का नाम है। संत मृत्यु लोक में आकर नहीं बनते अपितु ईश्वर के घर से बने हुए आते हैं तथा ईश्वर से पूर्ण शक्ति लेकर धरती पर संसार का उद्धार करने के लिए आते हैं। इनमें तथा ईश्वर में कोई अंतर नहीं होता, जैसे कि गुरुबाणी में भी आता हैः

राम संत महि भेदु किछु नाही।।

साधु का अर्थ है किसी चीज की साधना करना अथवा किसी चीज़ का बार-बार अभ्यास करना। जब कोई जीव ईश्वर के सच्चे नाम को साधना द्वारा अपने बाहर्य नौ द्वारों की साधना करके दसवें द्वार में प्रवेश करता है तो उस समय वह जीव साधु कहलाने का अधिकारी होता है तथा वह लोगों का भला करता है।

वास्तव में फकीर वह है जिसने दुनिया की ओर से मुँह मोड़ लिया हो तथा सच्चा धन एकत्र करने में जुटा हो जैसे कि गुरुवाणी भी कहती है:-

जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउु फकीर।।

फक्कड़ से भाव है कि जो ईश्वर की रज़ा में आ गया हो, जिसे सदा एक ही धुन रहती हो। यहां तक कि उसे भोजन मिल गया तो भी ठीक है, नहीं मिला तो भी ठीक है, वह तब भी ईश्वर का धन्यवाद करता है। उसे ईश्वर से कभी कोई शिकायत नहीं होती।

प्रश्न- **महाराज जी, वास्तविक दान किसे कहते हैं जो ईश्वर के घर में स्वीकार्य है?**

उत्तर- सर्व-प्रथम यह जानना आवश्यक है कि वास्तविक दान किसे कहा जाता है। वास्तव में ईश्वर के घर में वह दान स्वीकार्य है जो आप अपनी आवश्यकताओं को घटा कर देते हैं। जैसे कि यदि आपको अपने या अपने परिवार के लिए दस रुपयों की आवश्यकता है यदि उसमें से आप अपनी आवश्यकता को खत्म करके दान देते हो तो वह ईश्वर के घर में स्वीकार्य है। यदि आपको दस रुपये चाहिए तथा आपके पास बीस रुपये हैं और इस राशि में से आप दस रुपये किसी जरूरतमंद को देते हो तो यह दान ईश्वरीय घर में नहीं माना जाएगा और ना ही स्वीकार्य है। यह तो केवल जीव के अपने मन की तसल्ली है। या यदि आपके पास चार रोटियां है और इन चार रोटियों से आपकी भूख मिट सकती है और उसी समय यदि आपके पास कोई और भूखा जीव आकर आपसे रोटी मांगें और आप चार में से दो उसे दे दो और स्वयं भूखे रहो तो यह ईश्वर के घर में दान गिना जाएगा। अर्थात् जिसमें आपको भी तकलीफ महसूस हो वह वास्तविक दान है। यदि आपके पास दस रोटियां हैं आप कहते हो कि चलो बाकी फैंक ही देनी हैं, दान ही कर दो, यह दान नहीं है।

प्रश्न- महाराज जी, झूठ क्या है?

उत्तर- झूठ एक जीवन है जो कि नश्वर है। वास्तव में जो कि जीव अपने स्वार्थ वश किसी दूसरे को धोखा देता है या उससे हेरा-फेरी करता है, ठगी करता है वह झूठ है।

यदि कोई झूठ बोल कर किसी निर्दोष की जान बचा देता है न कि किसी दोषी की, उसे झूठ नहीं कहा जाता है।

प्रश्न- महाराज जी क्या मृत्यु से पूर्व इंसान को अपनी मृत्यु के बारे में पता लग जाता है?

उत्तर- साधारण जीव को तो कोई पता नहीं चलता कि कब और कैसे मरना है परन्तु नाम लेवा जीव को नामी-पुरुष सब कुछ बता देते हैं। पूर्ण-पुरुष कई बार नामी जीव को साल, छः-छः महीने पहले ही बता देते हैं। कई-कई बार तो वे दिन और समय भी बता देते हैं।

प्रश्न- महाराज जी, सेवा कितने प्रकार की है तथा कौन सी सेवा उत्तम है?

उत्तर- सेवा चार प्रकार की है :-

- पहली सेवा तन की है जो कि लोग अपने हाथों से सेवा करके अपना तन पवित्र करते हैं, धार्मिक स्थानों पर मिट्टी ढ़ोते हैं। पानी पिलाने की सेवा करते हैं। पंखा झुलाते है और कोई जोड़ों की सेवा करता है, कोई लंगर की सेवा करता है।

- दूसरी सेवा मन की है। जो कि मन से ईश्वर का स्मरण किया जाता है, या पाठ किया जाता है या किसी पूर्ण-पुरुष की शरणागत् मन उसे सौंप देना।

- तीसरी सेवा है धन की। जो कि जीव धर्मस्थानों पर जाकर अपनी किरत-कमाई को सफल बनाने हेतु किसी जरूरतमंद को दान करते हैं। परन्तु वास्तविक किरत-कमाई नाम की कमाई है।

- चौथी सेवा नाम की कमाई या संत सेवा है जो कि परलोक तक जाती है तथा वास्तविक सेवा है।

इन चारों श्रेणियों में कुछ सेवाएं ऐसी हैं जिनका फल ईश्वर के घर में जीव को अधिक मिलता है। वह है संगत के जोड़ो (जूतों) की सेवा तथा लंगर में संगत के जूठे बर्तनों को साफ करने की सेवा। जो जीव किसी स्वार्थवश सेवा करते हैं और कामना नहीं त्यागते, उनकी सेवा, सेवा नहीं लालच है परन्तु जो सेवा स्वामी के मन भा जाए वही सबसे उत्तम है।

प्रश्न- महाराज जी, सेवा तथा ड्यूटी में क्या अंतर है?

उत्तर- सेवा जीव अपनी इच्छानुसार करता है तथा ऐसी सेवा गुरु को भाए या न भाए कुछ नहीं कहा जा सकता, परन्तु सेवा का फल अवश्य मिलता है पर ड्यूटी वह है जो गुरु के मुख से मिलती है तथा वह स्वीकार ही स्वीकार होती है क्योंकि जो ड्यूटी गुरु स्वयं देता है उसमें वह स्वयं बसता है परन्तु सेवा में वह नहीं बसता। जिन जीवों को महापुरुषों के दरबार में ड्यूटी मिल जाती है वे बहुत भाग्यवान् होते हैं परन्तु जो उसकी दी हुई ड्यूटी को छोड़ कर दूर चले जाते हैं वे बड़े बद्किस्मत व बुरे कर्मो वाले होते हैं। इसलिए महापुरुषों की ड्यूटी सेवा से उत्तम है।

प्रश्न- महाराज जी, इस समय धरती पर देवी-देवता क्या कर रहे हैं?

उत्तर- जितना धरती पर विज्ञान बढ़ रहा है या अस्त्र-शस्त्र बन रहे हैं, वह देवी-देवता इंसान की बुद्धि में बस कर सब कुछ बनवा रहे हैं। एक समय आएगा जब शैतान आदमी की बुद्धि में बस कर इसका गलत प्रयोग करने की प्रेरणा देगा ताकि धरती नष्ट हो सके परन्तु तब ये देवी-देवता सहज रूप से इस पर काबू पाकर धरती को नष्ट होने से बचा लेंगे।

प्रश्न- महाराज जी, इंसान के हाथ पर लकीरें कब से पड़ीं ?

उत्तर- त्रेता युग से पूर्व जीव के हाथ बिलकुल साफ हुआ करते थे। त्रेता में जब सीता को वनवास हुआ और जब वह बनवास काट कर वापस आई तो उसे अग्नि-परीक्षा देनी पड़ी। जितना समय सीता वन में रही, श्री रामचन्द्र ने यज्ञ के

समय अपने गुरु विशिष्ठ के कहने पर सोने की सीता की मूर्ति बनाकर रखी। जब सीता की दूसरी परीक्षा (अग्नि-परीक्षा) हुई तो उसने दुखित मन से धरती माता से पुकार की कि हे माँ, मैं अब इस दुनिया में रहने योग्य नहीं हूँ, मुझे शरण दो। उसी समय धरती फट गई तथा सीता धरती में अलोप हो गई। उसके बाल अभी बाहर ही थे कि श्रीरामचन्द्र ने उसे बालों से पकड़ कर बाहर निकाल लिया। उस समय सीता ने श्री राम को कहा कि आज के बाद मैं कभी भी तुम्हारे साथ नहीं आऊँगी। तुम्हारे हाथों में मेरी किस्मत होगी, रहूँगी तुम्हारे साथ ही परन्तु दूर। तभी से हाथों पर लकीरें पड़ीं।

परन्तु इसके बाद किसी भी महापुरुष की पत्नी का नाम उसके साथ नहीं आया। जिस प्रकार द्वापर युग में श्रीकृष्ण के साथ राधा का नाम आता है उनकी पत्नी रुकमणी का नहीं।

प्रश्न- महाराज जी, दुख तथा रोग में क्या अन्तर है?

उत्तरः- रोग शारीरिक होता है तथा दुःख आत्मिक। जैसे कि यदि शरीर को कम-अधिक खाने से कोई बीमारी लग जाए तो वह रोग है। परन्तु जीव को दुःख तब से लगा हुआ है जब से वह ईश्वर के साथ से अलग हुआ है। इन दोनों की दवा गुरुशब्द (नाम) है।

प्रश्न- महाराज जी, दया, मेहर व कृपा में क्या अंतर है तथा यह जीवों पर कब होती है?

उत्तर- दयाः- दया ईश्वर की होती है। इसीलिए उनका नाम दीन-दयाल या दयालु है। उसकी दया हुई तो जीव को मानस जन्म मिला।

मेहरः- मानस जन्म में आकर जीव पर मेहर उस समय होती है जब उसे किसी पूर्ण-पुरुष के दरबार में जाकर साध-संगत में जुड़ने का अवसर मिलता है।

कृपाः- जीव पर कृपा तब होती है जब जीव महापुरुष के दरबार में जाकर नाम प्राप्त कर लेता है क्योंकि बिना कृपा के नाम नहीं मिलता है।

प्रश्न– महाराज जी, किरत, कर्म, किस्मत, नसीब व भाग्य में क्या अन्तर है?

उत्तर– किरतः– किरत वह है जो आप बिना झूठ बोले, बिना किसी का दिल दुखाए परिश्रम करते हो। इस परिश्रम से जो आपको धन प्राप्त होता है वह आपकी किरत-कमाई है परन्तु वास्तविक किरत-कमाई आपकी नाम की कमाई है।

कर्मः– उपरोक्त किरत कमाई में से किए हुए दान से कर्म बनता है अथवा दुखी की सहायता करना, सच बोलना, साध-संगत करना, सरबत का भला करना ही कर्म है।

किस्मतः– किस्मत स्वयं बनाई जाती है किसी महापुरुष का सहारा लेकर, उसके बताए हुए मार्ग पर चल कर।

नसीबः– नसीब ईश्वरीय घर से लिखे हुए आते हैं। जब जीव मृत्यु लोक में जन्म लेता है तो अपना नसीब साथ लेकर आता है। इसे भाग्य भी कहते हैं।

भाग्यः– नसीब और भाग्य एक ही चीज हैं।

प्रश्न– महाराज जी, द्वापर में पाण्डवों की एक ही द्रोपदी थी तथा श्रीकृष्ण महाराज की 360 सखियाँ थीं जबकि सामाजिक तौर पर आदमी एक ही स्त्री रख सकता है। ऐसा क्यों?

उत्तर– उन लोगों का मिशन होता है, दूसरे लोगों के लिए कुछ करना। इसलिए वे लोग मिशन के लिए काम करते हैं, परन्तु आप लोग जिस्मों (शरीर) के लिए करते हो मिशनों के लिए नहीं।

(प्रथम अध्याय समाप्त)

द्वितीय अध्याय

महाराज जी का संगत को ईश्वरीय संदेश

नोटः- महाराज जी ने रूहानी ज्योति में लीन अर्थात् मस्त होकर जो ईश्वरीय संदेश संगत को दिया, हम उसे हू-ब-हू प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।

27-5-84 तथा 28-5-84 की रात को प्रभात समय, सत्संग हॉल बर्मिंघम डेरे में महाराज जी ने कुछ ईश्वरीय वचन-विलास किए जो कि इस प्रकार हैंः-

सारी संगत से जो कसम महाराज जी ने मुख से बोलकर उठवाई।

कसम

ईश्वर की कसम हम ईश्वर के बंदों पर ईमान (भरोसा) लाएंगे।
जो ईश्वर के बंदे अपने गुनाहों से तौबा करके ईश्वर की ओर लगेंगे।

-यकीन

1. देश चाहे कोई भी हो, भेष एक ही है।ईश्वर एक ही है। जो उससे बेमुख हो जाता है तो दाता उसे कुछ देर तक पाप करने की मोहलत देता है। जब अति हो जाती है तो फिर उन्हें अपने पास रखकर आने-जाने के आवागमन से मुक्त कर देता है।

2. मेरे ईश्वर जिस प्रकार तू अपने दासों को सम्भालता है, उसी प्रकार मेरे ईश्वर.... उन बंदों को भी तू क्षमा कर दे जो तेरे भेजे हुए महरमों पर यकीन नहीं करते। मेरा ईश्वर सदा उन बंदों को माफ कर देता है। उसके बिना कोई और नहीं जिसने कभी न क्षमा मांगी हो।

3. धर्म हमेशा आज़ादी के लिए बना है, गुलामी के लिए नहीं। इसीलिए दास धर्म बनाया गया है। वैज्ञानिक आदमी की हालत खराब करने में लगे हुए हैं पर दाता बंदों को सुधारने में लगा है। दास धर्म भी इसीलिए बना है जिसके

स्वामी गुरु नानक देव जी हैं।

4. वह दाता है, हम सब उसके दास हैं। वह अपने भक्तों को समय-समय पर अपने-आप ही देता रहता है। माँगने की जरूरत नहीं पड़ती, वह देता है। वह सब कुछ देने वाला है। उससे कुछ छिपा नहीं है। सब कुछ वह जानता है। कई बार वह जान-बूझकर सेवक की अरदास पूरी नहीं करता क्योंकि वह अरदास सेवक के भले में नहीं होती या फिर सेवक उस वस्तु के योग्य नहीं होता।

6-6-1984 दिन बुधवार, रात को 12-50 पर बर्मिंघम डेरे के सत्संग हॉल में महाराज जी ने अपने ईश्वरीय नूर में बैठे हुए कुछ ईश्वरीय प्रवचन संगत में किए जो इस प्रकार हैं :-

"नानक पातशाह, सबके स्वामी हैं। वह सब कुछ जानने वाले हैं। वे पाप-पुण्य से रहित हैं। वे सूरज को ज्योति, चाँद को प्रकाश, तारों को चमक देते हैं। मेरा दाता सबको देता है, किसी से कुछ लेता नहीं क्योंकि मेरा दाता बहुत बुद्धिमान है। तुम सब जो दास बनकर दास-धर्म में आ जाओगे। उनको मेरा दाता कहता है कि बुद्धि दी जाएगी। जो हक को छोड़कर अगम में आ जाएंगे, मिल बैठेगें, एक का अध्ययन करेंगे, उनको मेरा दाता बुद्धि देगा। मेरे दाता से बढ़कर और कोई भी बुद्धिमान नहीं है।"

"जो जीव बुरे कर्मों से सम्भल जाता है उसे मेरा दाता माफ कर देता है। वह सहजवान और शीतल है। वह हमारे गुनाहों को जल्दी नहीं जतलाता। गुनाह करने वालों को पहले मेरा दाता मोहलत देता है।"

"सारे धर्म सच्चे है, सारे धर्म-ग्रंथ सच्चे हैं परन्तु हम स्वयं सच्चे नहीं हैं क्योंकि हम अपनी-अपनी सच्चाईयों के पीछे लगे हुए हैं।

'ईश्वर जब भी अपने दासों को धरती पर भेजता है, उनसे कर्म और धर्म पूरे करवा लेता है। ईश्वरीय किताबों (ग्रंथों) को वह अपने दासों से पूरा सत्कार दिलवाता है। वह प्यार का सबक देने आता है तलवार का नहीं। मेरे दाता ने ही सबको भेजा है।

"बंदों से जो काम उसने करवाना होता है करवा लेता है, यही उसकी पहचान है।"

"अब लड़ाई का वक्त नहीं है क्योंकि सारा काम विज्ञान का है। मगर अब वक्त ऐसा आ चुका है कि विज्ञान का भी सिक्का नहीं चलेगा। केवल गुरुनानक स्वामी का ही सिक्का चलेगा।"

26-5-84 तथा 30-5-84 की रात को 3.30 पर प्रभात के समय सत्संग हॉल, बर्मिंघम डेरे पर मस्ताने रूप में महाराज जी ने सत्संग हॉल में उपस्थित सारे सेवकों को जो ईश्वरीय शपथ दी तथा कुछ ईश्वरीय प्रवचन किए वह इस प्रकार है :-

"दास धर्म के दासो, दास धर्म इलाही इलहाम है, अकाल पुरख का कि जो दास मेरे बंदों पर यकीन ले आएंगे, मेरा दाता उन सबको माफ कर देगा।

कसम

(जो महाराज जी ने संगत को बोल कर दी।)

"मेरा दाता माफ करने वाला आप सब का स्वामी, सबसे श्रेष्ठ, सबसे बड़ा- गुण-ग्राहक और ज्ञानवान है"

प्रश्न- महाराज जी, दास धर्म में काले कपड़े पर पाबंदी क्यों लगाई गई है?

उत्तर- दरबार सचखण्ड नानक धाम।
महफिले-दास धर्म।
सवाल-जवाब-

काले कपड़े पर पाबंदी दास धर्म में जरूरी है। क्यों? कोई सवाल नहीं है क्योंकि, मेरा दाता डिक्टेटर है। इसीलिए उसके हुक्म से इंकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि मैं भी उस दाता का दास हूँ आप ही की तरह। हुक्म मानता हूँ अपने दाता का। तुम भी उस दाता के दास हो जिसने हम सबको, आप सबको एक ही नूर से पैदा किया है। दास डैमोक्रेटिक (लोकतांत्रिक) है।

- यकीन

"मेरे दाता ने कहा, तुम सब जहां भी होगे, मैं तुम सबका, आपका स्वामी और सच्चा मित्र हूँ जो जन्म-जन्म के बिछुडों को इकट्ठा कर लेता है।

- यकीन

(समयः प्रभात, ठीक 3.35, दिनांक 30.5.84)

हिन्दोस्तान में लोनी डेरे (दिल्ली) को वर

हिन्दोस्तान में वो है स्थान,
सचखण्ड नानक धाम।

"यह दासों की मददगार दरगाह होगी। दास धर्म के दासों का धर्म-स्थान होगा। यहां से धर्म शुरू हुआ...... जिसका नाम "दास धर्म" है। दास धर्म के दास जहाँ भी होंगे, पाँच बार हिन्दोस्तान के स्थान पर जाने से उनकी मुरादें पूरी होंगी और बरकत मिलेगी। यह मेरे दाता का फर्मान है। मैं दर्शन दास आप जैसा दास हूँ

- यकीन

(समयः प्रभात, 30-5-84)

आज दिन मंगलवार, दरबारे-सचखण्ड नानक धाम। महफिले-दास धर्म

"बैठे हुए दासों को संदेश देता है कि इसी तरह ही तुम भी ये बातें उन लोगों तक पहुँचाओ जो अल्लाह की बरकत से बेमुख बन बैठे हैं।"

"यदि वह तुम्हारी बातों पर यकीन ले आएं या अपने गुनाहों से वो तौबा कर लें तो मैं उन्हें माफ कर दूँगा क्योंकि मैं आप सबका दाता हूँ, कह दो उन लोगों को कि वो ....

मैं, दर्शन दास आप सबको अपने पिता के दिए हुए संदेश को उद्देश्य

समझ कर आप सबको उपदेश देता हूँ कि :-

"कह दो उन बंदों को कि तुम्हें यदि यकीन आ जाए और तुम बुरी बातों से जोकि सुनने, बोलने और देखने में आती हैं, यदि तुम इन पर तौबा कर लो तो जो मेरे दाता का संदेश है, वो पहुँचा दो उन बंदों तक जो मेरे दाता से बेमुख बन बैठे हैं और अंधे, गूंगे, बहरे हैं, उनको कह दो कि वो..............

– यकीन

दासों की ओर से

उपरोक्त ईश्वरीय इलहाम उस शक्ति का है जो कि सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान है जिसने सांसारिक जीवों को अपना संदेश हुज़ूर महाराज दर्शन दास जी द्वारा दिया। उस समय महाराज जी इस तरह लग रहे थे जैसे अपने आप में न हों बल्कि ईश्वरीय ज्योति में लीन हों। यह आँखों देखा हाल है।

(द्वितीय अध्याय समाप्त)

दास धर्म की आवाज़

हम शांति पाने के लिए अनेक साधन अपनाते हैं परन्तु फिर भी हमें शांति नहीं मिलती। उसका कारण है कि हम अनेकों ही धर्मों में बँट गए हैं और हमारा विश्वास, एक धर्म अर्थात् मानव धर्म में नहीं रहा। दास धर्म मानव धर्म को मानता है और मानवता का दास है न कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई का जो कि अपने-अपने धर्म को ऊँचा बताकर एक-दूसरे को मरने-मारने के गलत रास्ते पर चल रहे हैं। वास्तव में ये सारे मनुष्य हैं जो अपने आपको भूल चुके हैं। दास धर्म मनुष्यता में एकता व प्रेम पैदा करने हेतु अनेकानेक साधन तथा प्रबन्ध कर रहा है और वे हैं जाति-पाँति व सम्प्रदायवाद के भेदभाव को दूर करना, धर्म-स्थलों की पवित्रता को कायम रखना, नशीली वस्तुओं पर प्रतिबन्ध, अपने देश के प्रति देशवासियों के हृदय में देशभक्ति पैदा करना तथा जरूरतमन्द लोगों की यथासमय, यथासम्भव सहायता करना। दास धर्म एक ईश्वर को मानता है तथा मनुष्य को भी एक समझता है और प्रयत्न कर रहा है कि सभी जीवों को प्रेम, खुशी एवं सच्चाई से अवगत् करवाया जाए जो झूठी वस्तुओं के कारण खो चुकी है।

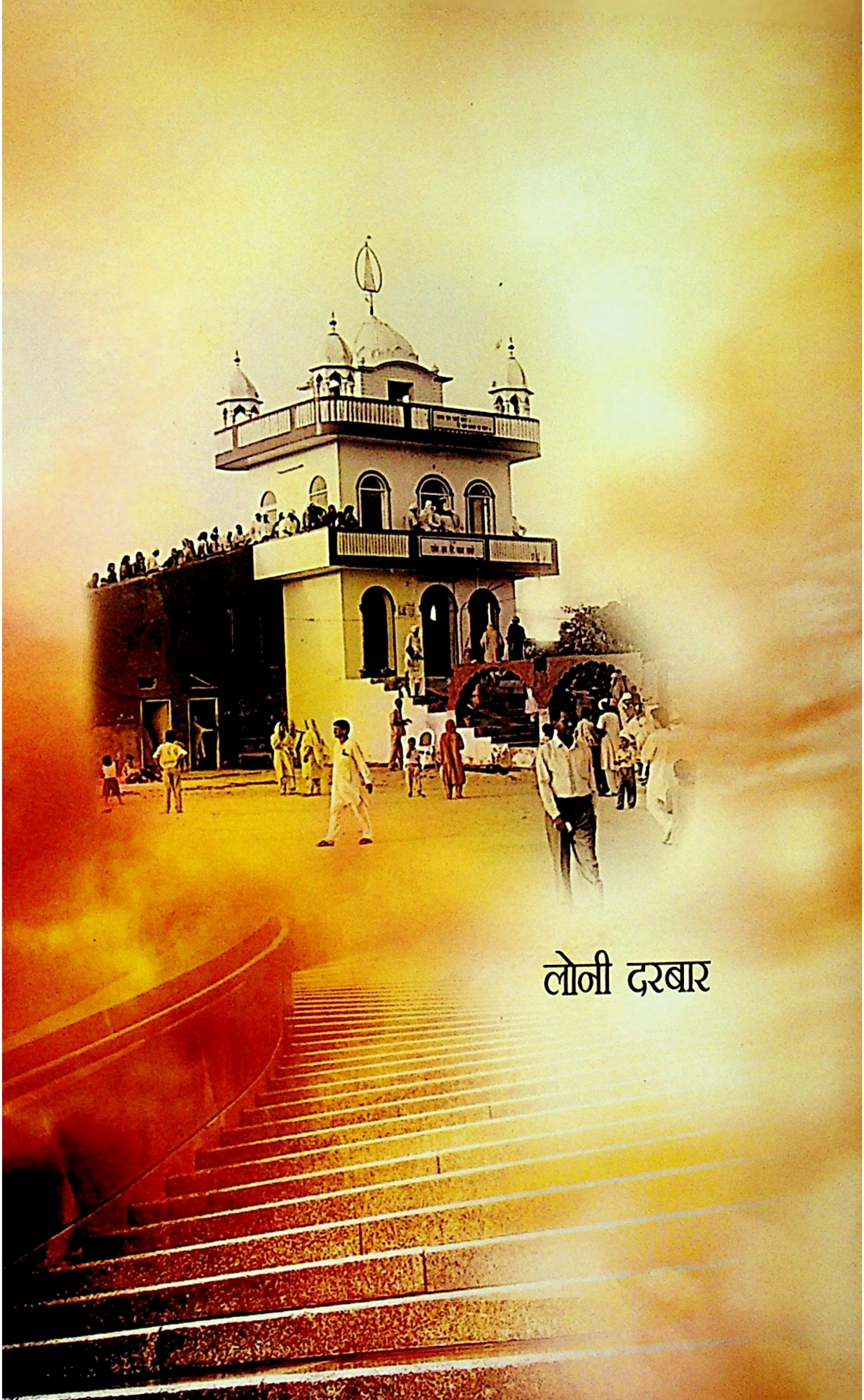
लोनी दरबार